Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

100 397

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्रीः ॥

# द्वितीयपाठावली.

DONATION

संस्कृतग्रन्थप्रकाशनकार्याध्यक्षः
त. गणपतिशास्त्री.

पं० आचार्य प्रियव्रत विद्या वाचस्पति प्रदत्त संग्रह

K. Narayana Iyengar,
CENTRAL BOOK DEPOT,
TRIVANDRUM.
1914.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# Sanskrit Reader

## No. II.

BY

T. GANAPATI SASTRI,

*Curator of the Department for the publication of Sanskrit manuscripts,*

TRIVANDRUM.

पं० आचार्य [illegible] महाराजाधिराज प्रदत्त संग्रह

PUBLISHED BY

K. Narayana Iyengar,

CENTRAL BOOK DEPOT,

TRIVANDRUM.

1914.

COPYRIGHT RESERVED.] [PRICE 6 ANNAS.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PRINTED AT THE

BHASKARA PRESS, TRIVANDRUM.

THIRD EDITION, 1,000 COPIES.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य श्री विद्यव्रत वेदवाचस्पति
भूतपूर्व कुलपति, गुरुकुल काँगड़ी
द्वारा प्रदत्त
ग्रंथ संग्रह.....

# द्वितीया पाठावली.

DONATION

संस्कृतग्रन्थप्रकाशनकार्याध्यक्षेण

त. गणपतिशास्त्रिणा

100397

विरचिता ।

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
सा. न.

अनन्तशयने

भास्करमुद्रालयाधिपतिना

के. नारायणय्यङ्गारित्यनेन स्वकीयमुद्रालये

मुद्रयित्वा प्राकाश्यं प्रापिता ।

---

१९१४ क्रिस्त्वब्दः.

[मूल्यं ६ आणकाः.]

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# PREFACE.

THIS book is styled the Second Reader. It will be easy to learn for those who are well-read in the First Reader, and the study of it, will help those who desire to take up the next higher number in the series.

A few easy compound words are used here and there in the different lessons.

**T. G.**

# निवेदना ।

इयं नाम '**द्वितीया पाठावली**' इत्यभिधीयते. प्रथमपाठावलीमधीतवद्भिर्बालैरस्या अध्ययनं सुकरं, तृतीयपाठावलीमध्येतुकामानामनुकूलं च. अस्यां समासवन्ति पदानि तत्रतत्राबाहुल्येन सुललितानि प्रयुक्तानि.

**त. गणपतिशास्त्री.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषयानुक्रमः


| विषयः. | पृष्ठम् | विषयः. | पृष्ठम् |
|---|---|---|---|
| १. माता पिता च. | १ | २१. अश्वः. | ३१ |
| २. मनुष्याणां कृत्यम्. | २ | २२. पान्थसिंहौ. | ३२ |
| ३. विद्या. | ३ | २३. तिमिः. (क) | ३४ |
| ४. वायुः. | ५ | २४. तिमिः. (ख) | ३५ |
| ५. दारिद्र्यस्य कारणम्. | ६ | २५. जम्बुकः. | ३६ |
| ६. रसवेदी. | ७ | २६. प्रश्नोत्तरावली. (क) | ३७ |
| ७. गृहाणि. | ९ | २७. प्रश्नोत्तरावली. (ख) | ३९ |
| ८. स्वार्थपरता. | १० | २८. पैशुन्यम्. | ४० |
| ९. आहारः. | १२ | २९. राजा निगडिताश्च. | ४२ |
| १०. विधिः. | १४ | ३०. चाटुश्लोकाः. | ४३ |
| ११. मौक्तिकानि. | १५ | ३१. सहसा विधानम्. | ४४ |
| १२. कलहः. (संवादः) | १७ | ३२. लोहाः. | ४६ |
| १३. को मदर्थे प्रयस्यति. | १९ | ३३. धैर्यम्. (क) | ४८ |
| १४. वृकवधः. | २१ | ३४. धैर्यम्. (ख) | ४९ |
| १५. शुको बिडालश्च. | २३ | ३५. दया. (क) | ५० |
| १६. प्रतिध्वनिः. | २४ | ३६. दया. (ख) | ५१ |
| १७. उष्ट्रः. | २५ | ३७. ऊर्णनाभो जालं च. | ५२ |
| १८. अलसता. (क) | २७ | ३८. सूर्यवायू. | ५४ |
| १९. अलसता. (ख) | २९ | ३९. हिमालयः. | ५५ |
| २०. जीवितसाफल्यम्. | ३० | ४०. उपदेशाः. | ५७ |


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# CONTENTS.


| | | |
|---|---|---|
| 1. | Mother and father. | 1. |
| 2. | Duty of men. | 2. |
| 3. | Education. | 3. |
| 4. | Air. | 5. |
| 5. | The cause of poverty. | 6. |
| 6. | Chemist. | 7. |
| 7. | House. | 9. |
| 8. | Selfishness. | 10. |
| 9. | Food. | 12. |
| 10. | Fate | 14. |
| 11. | Pearls. | 15. |
| 12. | Quarrel. | 17. |
| 13. | Who works for me? | 19. |
| 14. | Slaughter of the wolf. | 21. |
| 15. | The Cat and the Parrot. | 23. |
| 16. | Echo. | 24. |
| 17. | The Camel. | 25. |
| 18. | Idleness. | 27. |
| 19. | Idleness (continued.) | 29. |
| 20. | Usefulness of life. | 30. |
| 21. | The Horse. | 31. |
| 22. | The man and the lion. | 32. |
| 23. | The Whale. | 34. |
| 24. | The Whale (continued.) | 35. |
| 25. | The Fox. | 36. |


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




| | | |
|---|---|---|
| 26. | Catechism. | 37. |
| 27. | Catechism (continued.) | 39. |
| 28. | Backbiting. | 40. |
| 29. | The king and the prisoners. | 42. |
| 30. | Agreeable verses. | 43. |
| 31. | Thoughtlessness. | 44. |
| 32. | Metals. | 46. |
| 33. | Courage. | 48. |
| 34. | Courage (continued.) | 49. |
| 35. | Mercy. | 50. |
| 36. | Mercy (continued.) | 51. |
| 37. | The spider and its web. | 52. |
| 38. | The Sun and the Wind. | 54. |
| 39. | The Himalayas. | 55. |
| 40. | Advice. | 57. |


---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्रीः ॥

# द्वितीया पाठावली.

## १. माता पिता च.

माता तावद् दश मासानस्मान् कुक्षौ वहति; तदा जायमानं महान्तं क्लेशं रोगं च सहते; पथ्यैराहारैर्गर्भं पुष्णाति. प्रसवस्य समये तस्या दुःखमियदिति वक्तुं न शक्यते. प्रायेण तदानीं सा मृत्वैव पुनर्जायते. यावदन्नं स्वयं भक्षयितुमस्माकं शक्तिर्न जायते, तावत् स्तन्यं क्षीरं दत्त्वाऽस्मान् जननी वर्धयति. अस्माकमारोग्याय सा स्वयमौषधं सेवते; अस्वादु चाशनं गृह्णाति. अपिच प्रसूरस्माकमल्पमप्युपद्रवं जायमानमात्मन एव महान्तमुपद्रवं जातं मन्यते. अत्र विषये यथा माता, तथैव पिता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स उक्तानां मातुः क्लेशानां परिहारे बहून् यत्नान् करोति. किञ्चैतौ मनसास्माकं हितं सर्वदा चिन्तयतः, वाचा वदतः; कर्मणा च कुरुतः. एताभ्यां वत्सलाभ्यां प्रयत्नेन वयं चिन्त्यमानाः सन्तो बलिनः पटवो युवानः सम्पद्यामहे.

पश्यत बालाः! पित्रोः सकाशात् कियानुपकार ऋणमिवास्मास्वापततीति. तस्मात् तौ दैववदस्माभिः पूजनीयौ.

यौ सहेते बहून् क्लेशान्
वात्सल्यात् पोषणाय नः ।
दैववत् पूजनीयौ ता-
वस्माभिः पितरौ सदा ॥

---

## २. मनुष्याणां कृत्यम् .

पुरुषस्य बाल्ये माता पिता च रक्षकावित्यवदाम. यदासौ युवा सम्पन्नस्तदापि परस्य साहाय्यं विनात्मानं पोष्टुं नैव प्रभवति.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तथाहि—प्रशस्तेनैश्वर्येण युक्तः कश्चिद्राजापि सन् भोजनं शयनं विविधान् भोगांश्च भृत्यस्य प्रजायाश्च साहाय्येन विना कथं साधयेत्? भृत्यः प्रजा वा राज्ञः सकाशाद्रक्षाया अलाभे कथं सुखं जीवेत्? तथास्तिमान् जनः क्रेतव्यं वस्तु वणिजोऽभावे कुतो लभेत? वणिक् च पण्यं वस्त्वस्तिमतोऽभावे कस्मै विक्रीणीत? अपिच कश्चिदापदि दयया स्नेहेन वा परं चेन्न रक्षति, परस्तं कालान्तरे कथं रक्षेत्? एवं तावन्मनुष्यान् प्रति मनुष्याणां साहाय्यं यौवनेऽप्यपेक्षितम्; वार्धके तु सुतरामपेक्षितम्.

तदिदं साहाय्यमेकमेवावलम्ब्य यस्माल्लोकयात्रा प्रवृत्ता, तस्मादिदमेव मानुषाणां कृत्यमिति निश्चयः.

मिथः साह्यं मनुष्याणामालम्ब्यैव प्रवर्तते ।
लोकस्य यात्रा यत् तस्मात् कृत्यं तेषामिदं मतम् ॥

---

## ३. विद्या.

पशवः पक्षिणोऽन्ये च क्षुद्रा जन्तवो लोके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जीवन्ति. तेऽपि क्षुधि जातायामाहारं गृह्णन्ति, श्रमे जाते निद्रान्ति, स्वान्यपत्यानि रक्षन्ति, विरोधिने च द्रुह्यन्ति. तावन्मात्रस्य कर्मण आवश्यिका बुद्धिस्तेषामस्ति. मनुष्यस्य पुनस्ततो विलक्षणां कामपि बुद्धिं कारुणिक ईश्वरो दत्तवान् . अस्यामेव बहुधा संस्कारा आधातुं शक्यन्ते. मनुष्यस्तथा संस्कृताया बुद्धेर्बलाद् बलिनो जन्तून् दमयितुं सर्वं च लोकं वशयितुं शक्तो भवति ।

बुद्धेः संस्कारो नाम लौकिकानां वस्तूनां तत्त्वस्यावगमनं प्राचीनानां तथाधुनिकानां समाचाराणां विज्ञानं चोच्यते. तच्च विद्याया अभ्यासाज्जायते. यदि मनुष्यो विद्याया अभ्यासे बुद्धिं न प्रवर्तयेत् , तर्हि स पशुना तुल्यः स्यात्. आत्मना दत्तां बुद्धिं वृथायमकरोदिति तं मूर्खमीश्वरो दण्डयेत् .

तस्माद्विद्याया अभ्यासो मनुष्याणामवश्यं कर्तव्यः.

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## ४. वायुः.

वायुरस्मान् परितः सर्वदा विद्यते. किन्त्वेनं न चक्षुषा गोचरयितुं शक्नुमः. व्यजनेन वीजने क्रियमाणे सुखस्पर्शं यं पदार्थमनुभवामः, स एव वायुः. यदायं वेगेन वाति, तदा वृक्षाणां पत्राणि शाखाश्च कम्पयति. कदाचिदयं महतो वृक्षानुन्मूलयति.

मनुष्यो मृगो वा वायुना विना न जीवेत. विना वयमन्नं पानीयं वा कान्यपि दिनानि जीवितुं शक्नुमः. विना तु वायुं कतिपयैर्निमिषैर्म्रियेमहि ;वृक्षा ओषधयश्च न प्ररोहेयुः.

अस्मासूच्छ्वसत्सु वायुरस्माकं शरीरस्यान्तः प्रविश्य रक्तं शुद्धं करोति. अस्मासु निःश्वसत्सु शरीराद्बहिरागच्छन् वायू रक्ताद् गृहीतैर्दुष्टैर्वस्तुभिः संमिश्रो दुष्टो भवति. अतो जनानां सङ्घेनाधिष्ठिते संवृते गृहे विद्यमानो वायुः प्राणानां हितो न भवति.

कालिघट्टे बहुभ्यो वर्षेभ्यः प्राक् १४३ मनुष्या द्वाभ्यां वातायनाभ्यामुपलक्षितायां संवृतायां क्वचन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कारायां रात्रौ निवेशिताः. तावतां जनानां पर्याप्तः शुद्धो वायुस्तत्र नासीत्. अतोऽपरेद्युः प्रातस्तेषु २३ जनाः केवलं मृतकल्पा जीवन्तो दृष्टाः. सेदानीं कालगर्त इत्युच्यते.

तस्मादस्माकमारोग्याय शुद्धो वायुरावश्यकः. निःश्वासेन दूषिते वायौ पुनःपुनरुच्छ्वसनमस्माकं बलं हरति; रोगं च जनयति.

---

## ५. दारिद्र्यस्य कारणम्.

यो धनिको भवितुमिच्छति, स लभ्यमानं धनं सर्वं न व्ययेत्. स आयाच्न्यूनं व्ययं कुर्वन् यत्किञ्चिद् द्रव्यं यादृच्छिकस्य व्ययस्यार्थे रक्षेत्; रक्ष्यमाणं च धनं यथा वर्धेत, तथोपयुञ्जीत.

भारतीयास्तावत् प्रायेण व्ययमायतेरधिकं कुर्वन्ति. बहवो जनाः कन्याया विवाहेऽन्यस्मिन् वा तादृश्युत्सवे बन्धुः प्रातिवेशिको वा प्रचुरं धनं विनियुक्तवानिति कृत्वा स्वयमपि बहुलं धनं व्ययय-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



न्ति. केचिदेतादृशाय व्ययाय ऋणमपि कुर्वन्ति. अथ यदि व्ययितावशिष्टं धनं कस्याचित् स्यात्, स तद् भूमौ स्थापयति. अपिच, सर्वासु जातिषु स्त्रिय आभरणस्यार्थे महान्तं व्ययं कारयन्ति. त एते दारिद्र्यस्य हेतव आचाराः सर्वथा वर्जनीयाः.

सत्यं क्वचित्समये धनस्य भूमौ स्थापनमावश्यकमासीद्, यदा भारतखण्डमिदमाङ्गलेयानां साम्राज्यस्याधीनं नाभवत्. तदा हि तस्कराः क्रूराः सैनिकाश्च ग्रामान् नगराणि चाक्रम्यानवरतं व्याकुलयामासुः. तदानीं प्राणा अपि प्रजानां न स्वतन्त्राः, किमुत धनानि. सम्प्रत्याङ्गलराजशासनेन नीत्या परिपाल्यमानानामस्माकं न किञ्चिदपि भयमस्ति. अतो धनं भारतीयैर्भूमौ न स्थाप्यं; न वान्येन प्रकारेण रक्षणीयम्. किन्तु लाभहेतौ कर्मणि विस्रब्धं प्रयोक्तव्यम्.

---

## ६. रसवेदी.

पुरा चोलेषु कश्चिद्राजा बभूव. कोऽपि रस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वेदी सुवर्णस्य सृष्टौ शक्तमात्मानमभिनयंस्तं राजानमाससाद. राजा मां बहूनां धनानां दानेन सम्भावयिष्यतीति तस्य बुद्धिरासीत्. राजा न किञ्चिद्वसु तस्मै दत्तवान्; किन्तु शून्यां विशालां पेटिकामेकामदात्.

तं रसवेदी पप्रच्छ—'देव! विदुषां विषये त्वामुदारं जनाः कीर्तयन्ति. तत् कुतो मयि विपरीतं वर्तसे?' इति. लोकस्य वञ्चनायां रसवेदिनां सामर्थ्यं तेन राज्ञा प्रागेव ज्ञातम्. अतः स एवमुत्तरं ददौ—'भो रसवेदिन्! द्रविणं स्वयं स्रष्टुं शक्तोऽसि. तस्य ते द्रविणेन दत्तेन किं फलम्? स्वयं सृज्यमानस्य धनस्य पेटिका केवलमावश्यकेति कृत्वा पेटिकां तुभ्यं प्रादाम्' इति.

वस्तुतो रसवेदिषु विश्वासो न कार्यः. ते हि सर्वं लोहं सुवर्णं करिष्याम इति जनान् प्रलोभयन्ति; तेभ्यस्ताम्रं रजतं चापहरन्ति.

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## ७. गृहाणि.

गृहाणि नाम तद्वासिनां जनानामारोग्ये बहुलमुपकारकाणि भवन्ति. अतस्तानि प्रयत्नात् समीचीनसन्निवेशानि कार्याणि.

न तावन्निम्ने प्रदेशे गृहं निर्मातव्यं, यत्र जलावरोधो भवेत्. अक्लिन्नेऽपि स्थले भूतलं द्वित्रपदान्युत्थाप्य तत्र गृहं सन्निवेशनीयम्. तथा सन्निवेशने रोगहेतुर्भूक्लेदो न जायेत. गृहस्य पटलं तथा प्रवणं विधेयं, यथा वृष्टिजलं तूर्णमभिष्यन्देत.

गृहस्य संस्थानानि निरङ्कुशे वायोः सञ्चारेऽनुकूलानि कार्याणि. प्रायेण भारतीयानां गृहाणां मध्याङ्गणानि वायोर्वानेऽननुकूलानि; वातायनानि कवाटानि चोत्सर्गतः संख्यायामाकृतौ चाल्पानि दृश्यन्ते. तदेतन्न साम्प्रतम्।

संकुचितवक्रा वीथ्यो रोगं जनयन्ति. अतस्तत्र गृहाणि न कार्याणि. अपिच, तानि निबिडसंश्लिष्टानि न विधेयानि; नवा बहुतरैर्जनैरधिवस्तव्यानि.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शय्यागृहाणि मृद्भाण्डैः काष्ठैः कुतृणैरन्यैश्च नानाविधैरुपकरणैर्नापूरणीयानि अन्यथा तेष्वपेक्षिता वायुसम्पत्तिर्न स्यात्.

अवरतो वर्षस्य सकृद् गृहाणि सुधया लेपनीयानि. शुद्धिहेतुषु महार्घः कश्चित् पदार्थः सुधा नाम. मारीप्रसङ्गेषु च गृहाणि सुधालेपेन संस्कार्याणि.

अनुदिनं सर्वाः कक्ष्या मार्जनीयाः; वारस्य द्विः सकृद्वा जलेन क्षालनीयाः.

किञ्च गृहं परितः सुखावहाश्छायादानक्षमा वृक्षा आवश्यकाः. किन्तु तैस्तथा बहुलैर्न भाव्यं, यथा सूर्यातपस्य समीरणस्य चातीव प्रतिरोधः स्यात्. गृहपरिसरे गुल्मस्य प्ररोहणं नानुमन्तव्यम्. वृक्षेभ्यः पतन्ति पत्राणि दिनेदिने दूरतो निरसनीयानि.

---

## ८. स्वार्थपरता.

कश्चन श्वा मार्जारश्चाहारार्थिनौ कस्यचिन्महानसस्य द्वारेऽतिष्ठताम्. सूदस्तावुद्दिश्य बहुलं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भुक्तशिष्टमन्नं व्यकिरत्. तद् ग्रहीतुमुपधावितयोस्तयोर्बलिष्ठः श्वा मार्जारं दूरतो विद्राव्य सर्वमन्नं स्वयमभक्षयत्. इयं नाम स्वार्थपरता—यत् श्वा स्वोदरमेव केवलमचिन्तयत्. यथा श्वा, तथा मार्जारोऽप्यन्नं प्रतीक्षाञ्चक्रे. किन्तु बलाधिकः श्वा सर्वमन्नं स्वयं जग्राह.

शुनस्तावत् सदसद्विवेको नास्ति, नेश्वराविषया बुद्धिः, न वावदातरमणीयानामाचाराणां परिज्ञानम्. मनुष्याणां पुनस्ततो भिन्ना प्रकृतिराचारनियमश्च भिन्नः. तर्हि स्वार्थपरतां विहाय न्याय्ये धर्म्ये च पथि वर्तितव्यमिति भगवतोऽनुशासनमस्ति. अनेनैवाभिप्रायेण कारुणिको भगवाञ्जन्त्वन्तरविलक्षणां सदसद्विवेचिनीं सर्वकार्यनिर्वहणक्षमां बुद्धिं मनुष्येभ्यो दत्तवान्.

अन्येभ्यो देयस्य न केवलं दानमात्रं मनुष्यैः कार्यं; किन्तु तेषु स्नेहोऽपि निर्व्याजः कार्यः. स्वार्थपरतां हि लोके साधवो विगायन्ति. न खलु स्वार्थ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



परो जनो विश्वसनीयः सुकृती कृती वा भवति. यद्येकैको जनः स्वार्थमेव केवलमवेक्षेत, तर्हि सर्वो लोको दुःखैकरसो भवेत्. यदि बालानां यूनाञ्च मार्जारवत् श्ववच्च स्वार्थपरता स्याद्, अविश्रान्तो हि कलह उभयेषां भवेत्.

---

## ९. आहारः.

अस्माकं देहे तावदौष्ण्यस्य प्रतिनियता काचिन्मात्रा सर्वदापेक्षिता. यदि तस्या मात्राया हीनमतिरिक्तं वौष्ण्यं स्यात्, तदा देहोऽस्वस्थो भवति. शैत्येन पुनराक्रान्ते देहे सर्वाणीन्द्रियाणि निर्व्यापाराणि स्युः. तस्मादौष्ण्यं देहे सदा रक्षणीयम्.

अस्त्यस्माकमुदरे कश्चिदग्निः. असौ ज्वालां प्रदर्शयन् लौकिकाग्निवन्न बहिरुपलभ्यते. किन्त्वयमन्तःस्थितो देहमखिलमुष्णयति. अतिशीतेऽपि कालेऽस्यैव महिम्ना देहे सुरक्षित ऊष्मा तिष्ठति.

अस्याग्नेरिन्धनमाहारो भवति. आहारस्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करणे देहे शीतिम्न उपलम्भात् करणे चोष्मणोऽवस्थानादाहार एवौष्ण्यस्य हेतुरिति वक्तुं शक्यते. तत्र शाल्यन्नं देहौष्ण्यत्राणे भृशमनुकूल आहारः. तथैव गुडो घृतं तैलं च.

आहारो देहस्य बलं जनयति, रक्तमांसरूपेण च परिणमति. शाल्यन्ने मांसपरिणामी सारः स्वल्पः. गोधूमे मुद्गे माषे आढके च स बहुलो वर्तते. तेन गोधूमान्नभोजिनः शाल्यन्नभोजिभ्यो बलवत्तरा भवन्ति. आढकेन मिश्रं शाल्यन्नमतीव पुष्टिदं भवति. मधुररसा आहारा अतिमात्रं घृतं च न हितानि भवन्ति. तानि हि मांसं स्निग्धकोमलमापादयन्ति.

आहाराश्च पक्वाशयं प्राप्य यदि जीर्णा भवन्ति, तदास्माकं बलमावहन्ति. केचित्तु पदार्था अपक्वं फलं, पिष्टक इत्येवञ्जातीयकाः सुखमजीर्यन्तो भोक्तुरामयमुत्पादयन्ति. अतस्ते नाभ्यवहार्याः. अपिच, क्षुध्यनुपजातायां भोजनं न कर्तव्यम्. जातायां चाभुञ्जानेन न चिरमासितव्यम्.

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## १०. विधिः.

इदमित्थमितीशेन ललाटे लिखितां लिपिम् ।
महतापि प्रयत्नेन नान्यथा कर्तुमीश्महे ॥

इति कश्चिद्वाद आस्तिकजनमध्ये बहुलं प्रचरति. किन्तु सम्यक् कृतेष्वपि प्रयत्नेषु यस्य कार्यं न सिद्धं भवति, तादृशस्योद्यमशीलस्यैवायं वादः शोभते; न पुनरुद्यमहीनस्य.

उद्यमो नाम मनुष्याणां स्वधर्मो भवति. स एव कार्यसिद्धेर्मुख्यं द्वारम्. यदि पुरुषो भवितव्यतामालम्ब्य पाकानुकूलं यत्नं न कुर्वीत, तदा करस्थस्तण्डुलः कथमोदनरूपतां प्रतिपद्येत? ।

केचित् तावज्जना अलसतया मूढतया चैनं वादमाश्रित्य बहूननर्थान् सम्पादयन्ति. कश्चिन्मूढो मलप्रचुरे प्रदेशे वसन् कुत्सितेन चान्नेन देहयात्रां कुर्वन् रोगेणाभिभूयते. अस्यानर्थस्य हेतावात्मापराधे प्रत्यक्षेऽपि स आह—"मम भवितव्यतेदृशी" इति. तथा मातापितरौ चापलाद् दुष्टैः सहवासं कुर्वाणेषु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पुत्रेषु स्वयमुदासीनौ भूत्वा कालेन तेषु धूर्तचौरेषु जातेषु 'तादृशी तेषां शिरोलिपिः कथमन्यथयितुं शक्यते?' इति वदतः.

वस्तुत एवम्प्राया जनाः स्वधर्मं परित्यज्येश्वरे कारुणिके स्वापराधमारोपयन्तः पापमर्जयन्ति. ईश्वरो हि धर्माधर्मयोर्विवेचने शक्तां बुद्धिमस्मभ्यं दत्तवान्. तया यदि स्वधर्ममवधार्यानुतिष्ठेम, तर्हि पूर्वोक्ता अनर्था न जायेरन् न वयमेतावता दैवमप्रमाणं ब्रूमः; परन्तु कर्तव्येषु पुरुषकारेषु नोपेक्षा कार्येति.

---

## ११. मौक्तिकानि.

आपाण्डुभास्वरः कश्चित् पदार्थो मौक्तिकं नाम. शुक्तिविशेषात् तदुत्पद्यते. मौक्तिकशुक्तेरीषत्प्रवणाकृती द्वौ पुटौ वर्तेते. तौ यथापेक्षं विघटयितुं घटयितुं च शक्येते. तयोः पृष्ठं स्वभावात् परुषम्; अन्तर्भागस्तु श्लक्ष्णः शुक्लभासुरश्च भवति.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मुक्ताशुक्तयः समुद्रे जायन्ते. तत्रापि क्वचित्क्वचिदेव भागे ता उपलभ्यन्ते. तस्मिन्नपि भागे न सर्वदा ताः सुलभाः; किन्तु प्रतिनियते काले. निपुणाः कैवर्ता जले चिरं निमज्ज्य तास्तलस्थाः कृच्छ्रेण सञ्चिन्वन्ति. अस्मिन् कर्मणि लङ्कायाः पश्चिमवेलावासिनां धीवराणामत्यद्भुतं सामर्थ्यं दृश्यते. तत्र हि जलस्य उपद्वासप्ततानां पदानामधस्तले मुक्ताशुक्तीनां स्थितिः. धीवरा नावारुढास्तत्र गत्वा मङ्क्तारमुन्मज्जनपरिहाराय रज्जुबद्धशिलान्यस्तपादं कृत्वा जलेऽवतारयन्ति. स च यावच्छक्ति जलस्याधस्तले चिरमवतिष्ठमानस्ततइतः शुक्तीरुच्चित्य रज्जुमत्यां मञ्जूषायां निवेशयति. यदा चासौ मज्जनं न सहते, तदात्मानं शिलाबन्धान्मोचयन्नुन्मज्जाति. ततः कांश्चित् क्षणान् विश्रम्य पुनरपि शुक्तिविचयाय पूर्ववन्मज्जति.

एताभ्यः शुक्तिभ्यो लभ्यमानेषु मुक्ताफलेषु कानिचिद् गुणवन्ति भवन्ति, कानिचिन्न. तत्र गुण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वतां तेषां महन्मूल्यं भवति. एभिर्नानारूपाण्याभरणानि निर्मीयन्ते.

---

## १२. कलहः (संवादः)

सोमगुप्तः—किमिति रे हरदत्त! गौतमेन कलहायसे?

हरदत्तः—स कुत्सितेन नाम्ना मामाह्वयत्. तच्च न मह्यमरोचत. तेन मे कोपो जातः.

सोम—ततस्त्वं तस्मिन् किमाचरितवानासि?

हर—अहमपि कुत्सितेन नाम्ना तं प्रत्याह्वयम्. अथ स मह्यमेकं प्रहारमदात्. ततोऽहमाह्वये तं कलहाय.

सोम—एवं तावद्युवां दण्डोपर्युद्गम्य विग्रहं कुर्वतोर्द्वयोः क्रीडनकयोः समानौ समपद्येथाम्.

हर—किमुच्यते भोः? किमार्यो मन्यते?—'तत्कृतः प्रहारो मया तूष्णीं प्रतिग्राह्य' इति.

सोम—यदि स प्रतिगृह्येत, ततः को दोषो भवेत्? किन्नाम नार्हसि त्वमन्येषु जनेषु स्नेहं कर्तुम्?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स चेन्निःस्नेहस्त्वां ताडयेत्; त्वया स वक्तव्यो—'मा मां ताडय' इति; उपाध्यायो वा तदपराधं निवेदनीयः.

हर—आर्य! यद्युपाध्यायो न निवेद्यते, तर्हि मां ताडयन् स मया स्वयं नैव प्रतिताडनीय इति किं भवतोऽभिप्रायः? यदि शक्नुयाम्, अवश्यं तं हन्याम्.

सोम—सोऽयं स्वप्रतिभानुसारी तवाध्यवसायः. किन्त्वयं युक्तो न वेति न विचारयसि.

हर—न खल्वेतद्युक्तम्, यत् कुनाम्ना स मामाह्वयत्.

सोम—सत्यम्. किन्तद्युक्तम्? यत् पूर्वेद्युः शृण्वति मयि कुमारदासनामानं बालकं कुनाम्ना त्वमाह्वयः, स किं त्वां हन्तुमैच्छत्?

हर—तस्य का शक्तिरस्ति मां हन्तुम्. वयसा बलेन चाल्पो हि स बालकः. शक्नोम्यहमेकेन प्रहारेण तं भूमौ पातयितुम्.

सोम—साधु हरदत्त! साधु. इदं ते मतं, ब-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लाधिकस्त्वं दुर्बलं तं बालकं कुनाम्नामन्त्रयितुमर्हसि; स तु दुर्बलस्तूष्णीमासितुमिति. यदि तुभ्यं कुनामामन्त्रणेनात्मनि कृतापराधाय बलाधिकोऽहं कुप्येयं, ताडनं च दद्यां, तत् किं तव प्रियं भवेत्?

हर—नैवार्य! प्रियं भवेत्.

सोम—तर्हि यदात्मविषये प्रियं मन्यसे, तदेवान्यविषये त्वमाचर. मा तावदितः परमन्यस्मै द्रोहं कार्षीः.

हर—आर्य! गृहीत एष ते मया शिरसोपदेशः. नाहमद्यप्रभृति कस्मैचिदपि द्रुह्येयम्.

---

## १३. को मदर्थे प्रयस्यति?

कापि योषित् स्वकुटीद्वारे निषण्णा कर्मकरणश्रमं प्रतिदिनमात्मनानुभूयमानं ध्यायंध्यायं दूयमाना दीर्घमुष्णं च निश्वसतीत्थं विललाप—'अहो बत! महन्मे कष्टमविच्छिन्नमीश्वरो विदधौ; यदहमा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



त्मानमन्यार्थे प्रत्यहं बलवदायासयामि; न तु मदर्थे कश्चिद् आयस्यति' इति.

तदानीं तदन्तिके गच्छन्ती बुद्धिमती काचित् प्रातिवेशिकी तद्वाक्यमाकर्ण्य सोपहासमुवाच. किं ब्रवीषि सखि! 'न कोऽपि मदर्थे कर्म करोति' इति. असंशयं त्वमतथ्यग्राहिणी मूढासि. पचसि हि त्वं तण्डुलमनुदिनम्. कथमसौ तव करमयासीत्? कः केदारे धान्यमुवाप? कस्ततः परिणतं धान्यं लुलाव? कस्तदवघातेन वितुषविशदं कृत्वा विपणिमानिनाय? कटमासनं च क उदपादयत्? महार्णवस्य जलात् को लवणमुद्भावयामास? दिनेदिने येन त्वं शाकान् खण्डयासि, सोऽयमसिः किं स्वयमेव प्रादुर्बभूव? अयः किमात्मनैव भूमेर्निरगच्छत्? उलूखलं मुसलादिकं च को निर्ममौ? किं पाकपात्रं त्वं निरमाः?

अपिच वस्त्रं प्रति सखि! किञ्चिदालोचय. इदं हि कार्पासतन्तुभिर्निर्मितम्. कर्षकाः कृष्टेषु क्षेत्रेषु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



100397

कार्पासबीजान्युप्त्वा तत्तूलं सञ्जगृहुः. तन्निरस्थिकं कृत्वा सूत्रणचणाः सूत्रयामासुः. तैश्च सूत्रैस्तन्तुवाया इदं वस्त्रमवयन्. यदि कर्षकादय उक्तरीत्या न व्याप्रियेरन्, कथं ते वस्त्रलाभः स्यात्?

एवमल्पेऽस्मिन् कुटीरे त्वया दिवानिशमुपयुज्यमानानां पदार्थानामागमे विचार्यमाणे त्वदर्थे कृतप्रयासा जना असंख्याः प्रतीयन्ते. तस्मात् 'न कोऽपि मदर्थे प्रयस्यति' इति मा मुह्यहि' इति.

पुस्तकालय

## १९. वृक्षकथा

प्रान्स्देशे जीनो नाम कश्चिद् बालः पर्वतस्योपत्यकायां मात्रा सह कामपि कुटीमधिवसति स्म. तस्य पिता भटवृत्तिमाश्रयन् देशान्तरं जगाम. स गमनसमये जीनस्य हस्ते तस्य मातरं द्वे कनिष्ठे स्वसारौ च समर्पयामास. बालो द्वादशेऽपि वयसि वर्तमानः पित्रा समर्पितं भारं भक्त्या प्रीत्या च सम्यग् बभार.

पं० आचार्य प्रियव्रत विद्या वाचस्पति प्रदत्त संग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स एकदा काष्ठाहरणाय स्वसृभ्यां साकं वनमागत्य क्वचित् काष्ठानि च्छिन्दन् स्वस्रोर्भयाक्रन्दं शुश्राव. 'कुतोऽयं ध्वनिः' इति सावेगं विवृत्य सर्वतो दत्तदृष्टिः स स्वसारावभिपतितुं सन्नह्यन्तं पीनं कमपि वृकं ददर्श. जीनस्तत्क्षणे स्वस्रोर्वृकस्य चाभ्यन्तरं प्रविश्य करस्थेन कुठारेण वृकं प्रजहार. किन्तु स प्रहारो न तीव्र आसीत्. अतस्तेन वृको व्रणितमात्रोऽभवत्; न पुनर्मारितः. ततः स कोपावेशाज्जीनमभिपत्य व्रणितमकरोत्. तथापि जीनो धैर्यममुञ्चन् वृकेण सह विग्रहमकरोत्; अन्ते च तं परशुना तीव्रं प्रहृत्य भूमौ पातयामास. एवं तावदतिबाल्ये महता साहसेन स्वसारावात्मानं च जीनो ररक्ष-

तामिमां वार्त्तां प्रान्स्राज्यचक्रवर्ती नैपोलियः कर्णाकर्णिकया श्रुत्वा जीनं खलूर्यां प्रवेश्यायुधविद्यायां प्रवीणमकारयत्. ततो जीनस्तत्सेनायां समवेतः सुभटवृत्त्या जीवितकालं निनाय.

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## १५. शुको बिडालश्च.

ललना कापि मनोरमं शुकमेकं पुपोष. स तस्यां तथा विस्रब्धो बभूव, यथा स तस्य वासगृहमभितः पतेत्; आसने निषीदेत्; कराङ्गुलौ नृत्येत्; करतलस्थं भक्ष्यशकलं च भक्षयेत्.

बिडालोऽपि कश्चित् तस्या वशेऽवर्तत. स शुकपञ्जरवति तस्या वासगृहं मुहुरागत्य विहरन्नपि शुकस्य न कमप्युपद्रवं चकार. स हि शुकेन सह स्निग्धं व्यवहर्तुमुचितां शिक्षां बाल्ये ग्राहितः. एवं तौ शुकबिडालौ मिथः प्रियौ सम्पन्नौ.

कदाचिदंसलग्नेन शुकेन साकं बिडालानुगता सा महानसं प्रविवेश. तत्र शुको भक्ष्यशकलमेकं भूतलगतं दृष्ट्वा तद् ग्रहीतुं तस्या अंसाद्यावदवपपात, तावद् साश्चर्यं पश्यन्त्यां तस्यां बिडालस्तं सन्दश्य गृह्णन् वेगादुत्प्लुत्य भित्तेरुपरिभागमाश्रितः. यद्यपि शुकापायभयेन तस्या मनस्तदानीमुद्विग्नमासीत्, तथाप्यपूर्वदृष्टस्यास्य बिडालकर्मणो हेतुं तत्क्षणमेव प्रत्यक्षयन्ती सा स्वस्थमानसा बभूव.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अन्यो हि तदा बिडालो महानसस्य द्वारे सन्निहितः. तस्माच्छुकं रक्षितुमसौ बिडाल एवमाचरितवान्. पलायिते चागन्तुके बिडाले ललनाबिडालः सद्यः शुकं विससर्ज. उड्डीय चासावक्षताङ्गः स्वामिनीमुपजगाम.

---

## १६. प्रतिध्वनिः

कस्यापि वनस्यासन्ने कुत्रचित् केदारे क्रीडन् लक्ष्मणो नाम बालः कौतुकाद् 'हंहो' इत्युच्चैरुद्घुष्यति स्म.

तदा तस्माद्वनाद् 'हंहो' इति प्रतिध्वनिरुदियाय. प्रतिध्वनिरित्ययं पदार्थो लक्ष्मणेन पूर्वं न ज्ञात आसीत्. अतः स तं प्रतिशब्दं श्रुत्वा साश्चर्यकातर उवाच– 'कस्तत्र वर्तते' इति. पुनः 'कस्तत्र वर्तते' इत्येव प्रतिशब्द उत्पन्नः.

अथ 'रे मूढ!' इति तारं लक्ष्मणो जुघोष. प्रतिध्वनिरपि 'रे मूढ!' इत्येव वनान्निर्जगाम. एत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



च्छ्रवणेन लक्ष्मणः कोपाविष्टो बहुविधान्यधिक्षेपवचनानि प्रायुङ्क्त. तान्येव प्रतिध्वनिरूपाणि वनादपि निर्ययुः.

ततः स्ववचनसदृशं प्रतिवचनं केन वनात् प्रयुज्यत इति स्वयं ज्ञातुमशक्तो लक्ष्मणः सरभसं गृहमागत्य' वने निलीय स्थितः कश्चिद् बालो गर्हितैर्नामभिर्मामाह्वयति' इति पितरमावेदयामास.

पितोवाच—'वत्स ! लक्ष्मण ! स्ववचनानामेव प्रतिध्वनिं तथा त्वं श्रुतवानासि; न पुनरन्यस्य वचनम्. प्रथमं तव मुखाद् गर्हिता वाचो निर्गताः. ततस्तत्सरूपाः प्रतिनादा वनान्निस्सृताः.

यदि त्वं मधुरोदाराणि वचनानि प्रथमं प्रायोक्ष्यथाः, तर्हि मधुरोदारान् प्रतिशब्दानश्रोष्यः'.

प्रिया हि जनस्य वाणी प्रियां प्रतिवाणीं स्वयमुपहरति.

---

## १७. उष्ट्रः.

सन्ति लोके केचिदतिविस्तीर्णाः प्रदेशाः, ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मरव इति धन्वान इति चोच्यन्ते. तेषु न गृहाणि विद्यन्ते, न वृक्षाः, न नद्यो, नापि कूपाः.

तेषु यावद्दृष्टिपातं सिकताः शर्कराः शिलाश्चान्तरेण समन्तान्न किञ्चिद् द्रष्टुं शक्यम्.

तादृशे प्रान्तरे यात्रां कुर्वता स्वस्य स्वानुयायिनां चार्थे जलम् आहार इत्येवञ्जातीयकं पाथेयजातं बहुदिवसपर्याप्तं संग्रहीतव्यं भवति. न च तथाविधे मरुमार्गे महान्तं भारं वोढुमश्वाः शक्नुवन्ति. अतस्तेषामुपयोगाय महाबलः कश्चित् प्राणी कारुणिकेनेश्वरेण सृष्टोऽस्ति. सोऽयमुष्ट्रः क्रमेलक इति चाभिधीयते. यथा सागरपान्थानां महानौश्चिरोपभोगपर्याप्तान् पदार्थान् वहति, तथा क्रमेलको मरुपान्थानां सर्वान् भाण्डभारान् अनायासेन वहति. अतोऽयं 'मरुमहानौः' इत्युच्यते.

अयं स्वामिना पृष्ठे समारोप्यमाणं भारं जानुभ्यां भूमौ निविशमानः प्रतीच्छति. आह्निके प्रयाणे निर्वृत्ते प्राप्ते च विश्रमावसरे भारावरोपणाय पुनस्तथा प्राह्वो भवति.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एष निराहारो बहून् दिवसान् प्रयातुं शक्नोति; प्रस्थास्यमानश्च बहुदिनपर्याप्तं जलं पिबति. नखल्वेतदाश्चर्यं, यत् क्रमेलक आरभीयाः स्निह्यन्ति; स्तुतिपैरर्गीतैश्च तमुपगायन्ति. अश्वो हि स्वामिनं वहति, गौः क्षीरं ददाति, मेष आच्छादनार्था ऊर्णा वितरति, क्रमेलकस्त्वेषां त्रयाणां प्रयोजनमारभीयजनविषये निर्वर्तयति.

जीवन् भाण्डादिवहनात्
क्षीरदानाच्च धन्वनि।
उष्ट्रो मृतस्तु मांसेन
लोमभिश्चोपकारकः॥

---

## १८. अलसता. (क)

अलसस्याध्ययनावस्था.

'अहो कष्टमतिदारुणं पाठानां पठनं नाम. हन्त! ममेदानीमेकस्मिन् पत्रपृष्ठे स्थितानि सर्वाण्यपि पदान्यर्थैः सह धारणीयानि वर्तन्ते. एषा ममाशंसा, यत् पदान्यर्थवन्ति न स्युः.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भवतु; तानि पदानि वाचयामि तावत्.
(पदम्) "कारागृहम्" (अर्थः) "अपराधिनो यत्र निरुध्यन्ते, तत् स्थलम्" पाठालयस्योचितमिदमभिधानं 'कारा' इति. पाठालयो हि कारागृहमिति मम निश्चयः.

(पदम्) "दण्डनम्" पुस्तकं विनाप्यस्य पदस्यार्थमहं जाने. क्षुद्रोऽयं पाठः. नाहमस्य धारणां कुर्याम्.

(पदं) "आनन्दकरम्" (अर्थः) "सन्तोषस्य जनकम्" एतदप्यहं जाने. आनन्दकरं नाम दोलान्दोलनं कन्दुकक्रीडनं च.

तदेतत् प्रयत्नेन माधवं बोधयेयं, यदि स मद्वाक्यं शृणुयात्. स खलु नवनवानां ग्रन्थानां परिशीलनमानन्दकरं मूढो मन्यते. पठनं, पठनं, पठनमिति कोऽयं व्यापारः. स ईषदपि न मे सर्वात्मना रोचते. असंशयमहं यौवनदशायां पुस्तकस्य स्पर्शमपि न कुर्याम्. अपि नाम सम्प्रत्येव मम यौवनमाविर्भवेत्. इत्युत्कण्ठमानोऽलसो बाल्यं निनाय.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## १९. अलसता. (ख)

अलसस्य यौवनदशा.

अथाविर्भूतयौवने स एवं चिन्तयामास—कामं तरुण इदानीं सम्पन्नोऽस्मि. किन्तु बालदशायामाचरितस्य तथाविधस्य मौढ्यस्य फलमिदानीं दुःखमेव केवलं ममोपनतं वर्तते. अहं तदानीं पुस्तकान्यद्वेषम्; अधीतान् पाठान् अध्ययनार्थात् प्रयासादधिकतरेण प्रयासेन व्यस्मरम्.

पदेपदे मां पिता तदानुशास्ति स्म—'अयि पुत्रक! श्रद्धया ग्रन्थमधीष्व. अन्यथा यौवने त्वमनर्हो भविष्यसि' इति. 'पुत्रक! कुरु, यत् ते पिता कर्तव्यमाह. देह्यवधानमध्येतव्येषु पुस्तकेषु. अन्यथा मूर्खस्येयं जननीति लोको मामुपहसिष्यति' इति माता च मामनवरतमुपदिष्टवती.

वयस्यो मे माधवस्तु यथाकालं क्रीडन्नपि पाठालये गृहे च समयानहापयन् श्रद्धया ग्रन्थान् अधीतवान्. यद्यप्यावामिदानीं तारुण्यं तुल्यमवतीर्णौ तथापि मामपेक्ष्य स विद्यया दूरं भिन्नोऽभवत्.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अतीतकालोऽहमिदानीमात्मव्यतिक्रमं जानामि. किं करोमि? न खल्वध्ययनानुकूलो मे समयोऽस्ति, यतो दिनेदिने ग्रासार्जनाय मया व्यापरितव्यम्.

---

## २०. जीवितसाफल्यम्.

'यस्य जीवन्ति धर्मेण पुत्रा मित्राणि बान्धवाः ।
सफलं जीवितं तस्य नात्मार्थे को हि जीवति ॥ १ ॥
यस्य मित्राणि मित्राणि शत्रवः शत्रवस्तथा ।
अनुकम्प्योऽनुकम्प्यश्च स जातः स च जीवति ॥ २ ॥
वाणी रसवती यस्य भार्या पुत्रवती सती ।
लक्ष्मीर्दानवती यस्य सफलं तस्य जीवितम् ॥ ३ ॥
स जीवति यशो यस्य कीर्तिर्यस्य स जीवति ।
अवशोऽकीर्तिसंयुक्तो जीवन्नपि मृतोपमः ॥ ४ ॥
चलं वित्तं चलं चित्तं चले जीवितयौवने ।
चलाचलमिदं सर्वं कीर्तिर्यस्य स जीवति ॥ ५ ॥
दिवसेनैव तत् कुर्याद्येन रात्रौ सुखं वसेत् ।
तत् कुर्यादष्टभिर्मासैर्येन वर्षाः सुखं वसेत् ॥ ६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पूर्वे वयसि तत् कुर्याद्येन वृद्धः सुखं वसेत् ।
यावज्जीवं तु तत् कुर्याद्येन प्रेत्य सुखं वसेत्' ॥७॥

---

## २१. अश्वः.

उदात्तप्रकृतिरुपकारी कश्चिन्मृगोऽश्वो नाम. एष सौम्यः कर्मसु प्रवणश्च. न तावदयमीश्वरेण मनुष्याणां बाधनाय सृज्यते स्म; किन्तूपकाराय. असौ न कञ्चिदपि जन्तुमाहारार्थे हन्ति; अपितु तृणानि पलालानि धान्यानि च केवलमभ्यवहरति.

क्रूरेण वृकेण लक्षीकृतोऽयं नात्मानं रक्षितुं शक्नोति. यद्यप्ययं शीघ्रं धावितुं शक्तः, तथापि शीघ्रतरमस्माद्वृको धावति. कुलीनोऽश्वो वाहनार्थे युद्धार्थे च विनियुज्यते; ग्राम्यस्तु भारवहने.

अश्व आत्मनः स्वामिनि स्निह्यति; ईषत् परिचयाच्च तं विजानाति.

अस्ति काचिदश्वारोहस्य कथा. कस्यचिदश्वारोहस्य वशे कश्चिदभिजातोऽश्वोऽवर्तत. तस्य स्वामिनि महती भक्तिरासीत्. स स्वामिनि स्वपृष्ठमध्यासीने यथा प्रीतिमान्, न तथा कारणान्तरेण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रीतिमान् बभूव. अपिचासावोजस्वी गतिभेदेषु शिक्षित उत्साहांश्च.

सादी कदाचित् तमारुह्य भीषणं युद्धं प्राविशत्; शत्रुणा च हतस्तस्मादश्वात् पपात. अथातीतेषु कतिपयेषु दिनेषूपलभ्यमाने सादिनः शरीरे स स्वामिभक्तस्तदन्तिके तिष्ठन् दृष्टः न खलु तावच्चिरमश्वः स्वामिनः शरीरमुपैक्षत; किन्तु त्यक्ताहारनिद्रो गृध्रवायसादीन् मांसाशिनः पक्षिण उत्सारयंस्तदन्तिके स्थित एव. पश्यतौदार्यमश्वस्य.

---

## पान्थसिंहौ.

पान्थः कोऽपि दक्षिणस्यामाफ्रिकायां दीर्घां यात्रामुद्दिश्य प्रतस्थे. गृहादतिदूरं पन्थानमतीत्य विस्तीर्णे क्वापि समभूमार्गे गच्छन्नयं नातिदूरे सिंहं कञ्चिदपश्यत्. तत्समकालं सिंहोऽपि तं पश्यन् शनैश्शनैरनुगन्तुमारेभे. पान्थे त्वरितसञ्चारे त्वरितं मन्दसञ्चारे च मन्दं स चचार. अथ पान्थः स्थितः; सिंहोऽपि तस्थौ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इत्थं यत्नेन सिंहस्यात्मानुवृत्तौ तात्पर्यमालक्ष्य 'मृगेन्द्रोऽयमासायं मामनुगम्य तमसि प्रादुर्भूते हन्तुमिच्छति' इति पान्थस्य बुद्धिरुत्पन्ना. न चासौ सिंहस्य गोचरात् पलायितुमशकत्, यतस्तदपेक्षया सिंह आशुतरं धावितुं समर्थः. ततः पान्थः सिंहस्य वञ्चनायां कमप्युपायमुल्लिलेख.

100397

सोऽधस्तान्महागर्तसंश्लिष्टमुन्नतं कमपि प्रपातमाजगाम. अवनतश्च भूत्वा तत्रस्थाया महाशिलायाः पश्चाद्भागे सिंहादृश्ये निलीयते स्म. ततो वृक्षशाखां शिलान्तरालदृष्टां काञ्चिदादाय स आत्मनः कञ्चुकेनोष्णीषेण च मनुष्याकृतिं कृत्वा स्वनिलयनशिलाया उपरि निवेशयामास.

कपटेन दूरमध्वानं मन्दंमन्दमनुगच्छन् सिंहोऽपि नातिचिरेण तत्रागतः; दृष्ट्वा च ते कञ्चुकोष्णीषे सद्यस्तत्राभिप्लुत्य महागर्ते भ्रष्टो ममार.

एवं पान्थ आपदं निस्तीर्याचिरेण गृहं प्रपेदे.

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## २३. तिमिः. (क)

अस्ति तिमिरिति कश्चिज्जलचरो जन्तुः. न केवलं जलचरेभ्यः प्राणिभ्यः, किन्तु स्थलचरेभ्योऽप्येष महत्तमः. अयं विशालस्यापि गृहस्योदरे न माति.

अयं मत्स्यविशेष इति साधारणो जनवादः. पण्डितास्तु कथयन्ति—यस्मादयं मनुष्यवत् श्वसिति, तस्मान्न मत्स्यजातिर्भवतीति.

अस्य स्थलवासाभवात् सञ्चारार्थे न चरणा अपेक्षिताः. अतश्चरणशून्य एवायमीश्वरेण सृष्टः. एष वालस्य पक्षयोश्च बलेन समुद्रस्यान्तः स्वैरं तरति.

अस्यातिविशालमास्यकोटरमस्ति; न तु दन्ताः सन्ति. अतस्तनुकायानि यादांसि सङ्घशः कबलयन्नयं देहयात्रां करोति. अस्य महाकुक्षेराहारार्थेऽपेक्षितानि यादांस्येतावन्तीति न परिच्छेत्तुं शक्यन्ते.

मनुष्या महानावमारुह्य तिमिगोचरान् प्रदेशान् गच्छन्ति; अयश्शूलविशेषेण तिमिवेधनीनाम्ना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तं मारयन्ति च. किन्तु तत्रोद्यमः परमं साहसं, यतस्तिमिरेकेन वालप्रहारेण नावं मज्जयेत्.

महानाविका मृतस्य तिमेर्मेदांसि तैलार्थे भाण्डेषु संगृह्य गृहमानयन्ति.

तिमेर्मुखभागस्थान्यस्थीनि च्छत्रावयवनिर्माणेऽन्यत्र चोपयुज्यन्ते. तिमिविशेषस्यावयवो दीपवर्तिनिर्माण उपयुज्यते.

---

## २४. तिमिः. (ख)

महाकायस्तिमिर्नाम राजा सकलयादसाम् ।
मोदमानोऽम्बुधेर्मज्जन्नगाधेऽम्भसि खेलति ॥ १ ॥
जलस्याधस्तलं याति कदाचित् कौतुकात् तिमिः ।
अथोपरितलं याति वालवीजनकेलये ॥ २ ॥
यतोयतोऽयं चरति नवा वीथीस्ततस्ततः ।
प्रवर्तयति विस्तीर्णाः पारावारस्य वारिणि ॥ ३ ॥
तिमिगोचरसञ्चारी प्रायः साहसिको जनः ।
तद्वालैकप्रहारास्तमग्ननौको विपद्यते ॥ ४ ॥
व्यादाय कोटराकारमास्यमम्बुनिधौ तिमिः ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सङ्ख्यातीतानि यादांसि गृह्णाति क्षुदुपागमे ॥ ५ ॥
बहिष्कृत्य शिरोरन्ध्रद्वारेणास्यगता अपः ।
कुक्षिमापूरयत्येष गिरन् यादांसि केवलम् ॥ ६ ॥
कण्ठीरव इवारण्ये मृगणां, यादसां तिमिः ।
साम्राज्यसुखमम्भोधौ निर्विशत्यकुतोभयम् ॥ ७ ॥

---

## २५. जम्बुकः.

अजं कमपि चोरयित्वा वनमार्गेण नयन् कश्चिज्जम्बुको मृगवागुरायां संलग्नपादो बभूव. स यदा प्रयतमानोऽपि वागुरायाः स्वपादं मोचयितुं न शशाक, तदा विषण्णोऽन्तिके चरन्तं कमपि शुनकं प्रार्थयामास.— 'भ्रातः! प्रसीद. मोचय तावन्माम-गतिमस्माज्जालाद्' इति.

सोऽब्रवीत— 'नाहं शक्नोमि जालात् त्वां मोचयितुम्. किन्तु त्वया वहनीयमिममजं त्वदर्थेऽहं वहामि' इति.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



क्षणेन चासौ धूर्तः सविषादं पश्यतस्तस्य तमजमाकर्षन् स्वैरं ययौ.

दुर्जन उपकारं याचितोऽपकारं कुर्यात्.

---

## २६. प्रश्नोत्तरावली. (क)

गृहस्य कतमो भागः प्रथमं निबध्यते ? गृहमूलम्.

स कुत्र निबध्यते ? भूतलस्याधस्तात्.

किमर्थमसौ भूतलस्याधस्तान्निबध्यते ? गृहस्य दृढावस्थानाय वृष्टिजलस्य क्लेदस्य वा भित्त्यधोभागे प्रवेशनिरोधाय च.

तस्योपरि किं निर्मीयते ? भित्तिः.

केन साधनेन तस्या निर्माणं भवतिः. ? घनेष्टकया शिलया वा चूर्णलेपसहितया भवति.

इष्टकायाः शिलायाश्चालाभे केन सा निर्मीयते ? दारुणा अयसा वा.

शिलाः कुत आनीयन्ते ? तदाकरात् पर्वतादेः.

कथमिष्टकायाः सृष्टिः ? मृदेवेष्टकायन्त्रपरिच्छिन्नाग्निपक्वेष्टका सम्पद्यते.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कः शिलामिष्टकाकारां रचयति? अश्मतक्षा शिलां टङ्केन तष्ट्वा इष्टकाकारां करोति.

इष्टकादिना गृहनिर्माता केन नाम्ना व्यवहर्तव्यः? गृहकारुरिति वा इष्टकाचेतेति वा.

चूर्णलेपस्य कथं निष्पत्तिः? चूर्णवालुकाभ्यां जलमिश्राभ्याम्.

किं चूर्णं नाम? भौमः शिलाविशेषः पाकपुट्यां दाहेन संस्कृतश्चूर्णमित्युच्यते. शुक्तिरपि दाहेन संस्कृता चूर्णतां प्रतिपद्यते.

किमर्थं गृहकारवो भित्तौ चतुरश्रमन्तरं रचयन्ति? कवाटाय वातायनाय च.

कवाटस्य का प्रकृतिः? दारु.

यद् द्वाराद्विश्लिष्टं बहवोऽपि बालाश्चलयितुं न शक्नुवन्ति, कुतस्तादृशं कवाटं द्वारसंश्लिष्टमेको बालः सुखेन घटयति विघटयति च? तथानुगुण्येन कवाटस्य द्वारग्रन्थिषु संश्लेषणात्.

केन साधनेन द्वारग्रन्थयो निर्मीयन्ते? अयसा पित्तलेन वा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कथं कवाटं नियन्त्र्यते? अर्गलेन तालकेनवा.

---

## २७. प्रश्नोत्तरावली. (ख)

वातायनानि कथं कल्प्यन्ते ? दर्पणानुषक्तैर्दारुमयैराधारैः.

किं निमित्तं वातायनानि दर्पणमयानि क्रियन्ते ? आलोकस्य गृहान्तः प्रवेशाय वातवृष्टिनिरोधाय च.

कथं दर्पणनिर्माणम् ? लवणविशेषमिश्रयाग्नेयशिलया सिकतया वा द्रवीकृतया.

किमर्थं वातायनानि विवृतानि कार्याणि ? शुद्धवायोः प्रवेशाय.

भित्तिनिर्माणानन्तरं गृहस्योर्ध्वभागः केनाच्छाद्यते ? पटलेन.

पटलस्य कथं निष्पादनम् ? कृशेष्टकाभिराच्छदितैर्दारुभिः.

कुटीरेषु कीदृशानि पटलानि ? तृणमयानि तालपत्रमयानि केरपत्रमयानि वा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गृहस्यान्तर्देशः कथं विभज्यते? कोष्ठ इति कक्ष्येति च.

गृहे पाककोष्ठो भोजनकोष्ठः शयनकोष्ठ इति बहवः कोष्ठाः किमर्थमपेक्षिताः? पाककोष्ठे भोजनस्य भोजनकोष्ठे स्वापस्य च हितत्वाभावात् तत्तदर्थे पृथक् कोष्ठा आवश्यकाः.

किमर्थं भूतलस्याधस्तात् कोष्ठः क्रियते? गृहोपकरणानां पात्रादीनां रक्षणार्थम्.

गृहस्योपरि भूमिकायां विद्यमानानां कोष्ठानां क उपयोगः? कस्मिंश्चित् कोष्ठे लेखनादिव्यापाराः क्रियन्ते; कस्मिंश्चिद्विश्रम्यते; कस्मिंश्चिदिष्टजनैस्सह सम्भाषणं क्रियते.

कोष्ठे दिवा तिमिरं कथं सम्पादनीयम्? द्वारस्य कवाटेन पिधानात्.

तत्र रात्रौ प्रकाशः कथं सम्पाद्यते? दीपेन.

---

## २८. पैशुन्यम्.

कोऽपि मृगेन्द्रो वनेष्वतिमात्रपर्यटनात् किञ्चिदस्वस्थशरीरो बभूव. अन्ये मृगास्तस्य कैङ्कर्यमा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चरन्तस्तं परिवार्योपासाञ्चक्रिरे. तत्परिवारेष्वन्यतमो जम्बुकः परं तमुपासितुं नागमत्. तत्र कारणं जिज्ञासमाने मृगेन्द्रे वनगर्दभः सविनयं निवेदयामास— 'एषु दिनेषु जम्बुकः स्वामिनमवजानाति. स तत इतः स्वामिनं रोगाभिभूतं शंसन् स्वच्छन्दमटति' इति.

अनेन पैशुन्येन मृगराजस्य मनो जम्बुके कलुषमभवत्. तदेतद्विदित्वा जम्बुकः सिंहस्य समीपमाजगाम. सिंहस्तु क्रोधकलुषया दृष्ट्या तं पश्यन्नपृच्छत्— 'रे! जम्बुक! कुतस्त्वमेषु दिनेष्वत्र नागत' इति.

स तं प्रणम्य विज्ञापयामास—'महाराज! अस्वस्थो देव इति यदाहमज्ञासिषं, तदा प्रभृत्यनुगुणमौषधं सर्वतोऽन्विष्यन् कथमप्येभिर्दिनैर्वैद्यमुखात् तद् ज्ञातवानस्मि. ततो न मां देवो भक्तिशून्यं मन्तुमर्हति' इति.

अथ सन्तुष्टेन मृगेन्द्रेण 'किं तदौषधम्' इति पृष्टो जम्बुकोऽवदत्— 'कोष्णं वनगर्दभस्य रुधिरम्' इति.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्रुतमात्र एव तद्वाक्ये सहसा सिंहो वनगर्दभं पुरस्थितमभिप्लुत्य तस्य रुधिरं पपौ.

---

## २९. राजा निगडिताश्च.

कश्चिद्राजा स्वराज्यस्य महाकारागृहं वारंवारं गत्वा पश्येत्.

स एकदा तत्र क्वापि प्रदेशे पञ्च निगडितान् पुरुषान् स्वव्यापाराय गच्छतोऽपश्यत्. आनाय्य च तानग्रतः पृथक् तेषां कारागृहप्रवेशे हेतुमपृच्छत्.

तेष्वेकोऽवदत् – 'निरपराधेऽप्यात्मनि मुख्य-साक्षिणो मिथ्यावादादपराध आरोपित' इति.

अन्योऽब्रवीत् 'पूर्वसिद्धेन द्वेषेण प्राड्विवाकस्तं कारागृहे प्रवेशितवान्' इति.

अपरोऽन्यथाग्रहादात्मानमपराधिपक्षे निक्षिप्तमुवाच.

इतरः 'कृतापराधेऽन्यस्मिन् ग्राह्ये निरपराध आत्मा गृहीत' इति जगाद.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उक्तैरेव कारणैस्ते सर्वे स्वेषां कारागृहान्मोचनमपि राजानं ययाचिरे.

अथ राजा तेभ्यो दृष्टिं निवर्त्य पञ्चमं पप्रच्छ—'कुतस्त्वं कारां प्रविष्टोऽसि ?' इति.

स जगाद—'हन्त ! अहं धनपेशिकां चोरितवानस्मि. न चाहमुत्सहे मोचनं त्वां याचितुम्' इति.

राजावोचत्—'यद्येवं, तर्हि न त्वमेतैः साधुशीलैरनपराधमात्मानं वदद्भिः सह वस्तुमर्हसि' इति.

काराधिकारिणं चासावाज्ञापयामास—'विसर्जय तावदिमं छिन्नशृङ्खलं कारागृहात्. नह्ययं स्वाऽपराधं मिथ्यावाददोषेण द्विगुणमकरोद्' इति.

---

## ३० चाटुश्लोकाः.

सा भार्या या प्रियं ब्रूते स पुत्रो यत्र निर्वृतिः ।
तन्मित्रं यत्र विश्वासः स देशो यत्र जीव्यते ॥ १ ॥

पुरुषा विद्यया भान्ति राजानो विजयश्रिया ।
श्रियोऽनुकूलदानेन लज्जया च कूलाङ्गनाः ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जले तैलं खले गुह्यं पात्रे दानं मनागपि ।
प्राज्ञे शास्त्रं स्वयं याति विस्तरं वस्तुशक्तितः ॥ ३ ॥
उदारस्य तृणं वित्तं शूरस्य मरणं तृणम् ।
विरक्तस्य तृणं नारी निस्स्पृहस्य तृणं जगत् ॥ ४ ॥
पुस्तकस्था च या विद्या परहस्ते च यद्धनम् ।
कार्यकाले समायाते न सा विद्या न तद्धनम् ॥ ५ ॥
विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च ।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं सदैव तु ॥ ६ ॥
कोकिलानां स्वरो रूपं नार्या रूपं पतिव्रतम् ।
विद्या रूपं कुरूपाणां रूपं शक्तिमतां क्षमा ॥ ७ ॥

---

## ३१. सहसा विधानम्.

कौचिद् दम्पती गृहे नकुलमेकं परिवर्धयामासतुः. यथायथा तौ नकुलेऽनुरागवन्तौ बभूवतुः, तथातथा स तयोरनुरागवान् विस्रब्धश्च बभूव. स हि तयोः शय्यायामुत्सङ्गे च स्वैरं मुहुःक्रीडन् सन्तुतोष.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तं तथोपलालयतोस्तयोः पुमपत्यमेकमजायत. स तेन शिशुना सह भ्रतृभावमिव दर्शयन् मुहुरहिंसया रेमे. दम्पत्योश्च कार्यान्तरे व्यापृतयोर्नकुलः पार्श्वे स्थित्वा शिशुमन्वासाञ्चक्रे. ततस्तस्मिन् शिशौ नकुले वा तुल्यैव दम्पत्योः प्रतिपत्तिरासीत्.

क्वचन दिने पत्यौ कृषिमवेक्षितुं गते, मञ्चप्रसुप्तं शिशुं वासगृहे नकुलसहायं विसृज्य जाया स्नानाय वापीं जगाम.

अथ मुहूर्तेऽतीते स्नात्वा जलपूर्णं कुम्भमादायागच्छन्ती सा गृहस्य द्वारोपान्ते स्थितं स्वागमनमार्गे दत्तदृष्टिं तं नकुलंददर्श. 'कुतो नु खल्वयं शिशुं विहाय द्वारमायात' इति चिन्तयन्ती च सा सत्वरं द्वारं प्रविश्य रक्तप्रवाहोपलिप्तं नकुलस्य देहं यावन्निर्वर्णयामास, तावद् दुर्दैववशात् शोकक्रोधाभ्यां ज्वलिता बभूव. तस्या ह्येवं बुद्धिरुत्पन्ना—'असंशयमयं नकुलस्तीक्ष्णैर्नखैः शिशुं विदारितवान्' इति.

सद्य एव च क्रोधान्धहृदया सा नकुलस्य शिरसि जलकुम्भं चिक्षेप.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ततः सरभसं वासगृहं गता सा तस्मिन् मञ्चे सुखसुप्तमक्षताङ्गं प्रियं स्वाशिशुं ददर्श; मञ्चस्य समीपे च च्छिन्नभिन्नावयवं कमपि भीमं सर्पकायम्.

उदारशीलः स नकुलः सर्पसन्निधानात् सम्भावितां भ्रातुरापदमात्मना वारितां जनन्यै निवेदयितुं प्राग् वासगृहाद् द्वारोपान्तमागतः. तमेतं तस्य स्नेहौदार्यमधुरमभिप्रायं सर्पकायदर्शनोत्तरं विदितवती सा निष्प्रतीकारमनुतापं यावज्जीवमनुबभूव. पुत्रकल्पं पुत्ररक्षिणमात्मसंवर्धितं नकुलं मोहात् स्वयं हतवतीयमसमीक्ष्यकारिणी महापातकिनीति पतिर्बान्धवाश्च तां निनिन्दुः.

---

## ३२. लोहाः.

लोहाः प्रायेण मृद्भिः शिलाभिर्लोहान्तरैर्वा व्यामिश्रा एवाकरादुपलभ्यन्ते; न शुद्धरूपाः. किन्तु ते क्षालनेन क्षोदनेन दाहेन वा मृदादेर्विभज्य शुचीक्रियन्ते.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तत्र सुवर्णं तावत् स्वभावाद् भास्वरगौरं गुरु मृदु च. तद् आस्त्रेलियायामुत्तरामेरिकायां च बहुलमुपलभ्यते.

तस्योत्पत्तिस्थानानि सुवर्णाकरा इत्युच्यन्ते. सुवर्णमाकरात् प्रायः कणश एव लभ्यते; कदाचित् तु राशिरूपेण. नदीनां पात्रेषु चेदं सिकतासङ्कीर्णमुपलभ्यते.

सुवर्णं गुणतो मूल्यतश्च सर्वेषु लोहेषु श्रेष्ठं भवति. अनेन नानारूपाणि नाणकानि भूषणानि पात्राणि च सृज्यन्ते.

रजतं दीप्रशुक्लवर्णं भवति. तस्य लोहान्तरापेक्षया मूल्यं गुरुत्वं चाधिकं, सुवर्णापेक्षया तु न्यूनम्. तस्यामेरिकायां प्राय उपलब्धिः.

रजतेन नाणकान्याभरणानि विचित्राणि भाजनानि चोत्पाद्यन्ते.

अरुणवर्णो लोहस्ताम्रं नाम. स बहुत्रोपलभ्यो मूल्ये रजतादतीवावरः. तेनापि नाणकं पात्राणि च निर्मीयन्ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आनीलधूसरं नागं नाम. तद् बहुषु भूभागेषूपलभ्यते. सर्वेषु लोहेषु तद् मृदुतमम्. अतस्तदनायासेन नानाकारं कर्तुं शक्यते. तेन गृहाणां पटलानि जलप्रणाल्यः पात्राणि च कल्प्यन्ते.

---

## ३३. धैर्यम्. (क)

चपलाः केचिद् बालाः पठनसमयेषु निभृतं शीशब्दं कुर्वन्त उपाध्यायमबाधन्त. 'मा कुरुत शीशब्दम्' इत्यसकृदुपाध्यायेनोक्ताश्च ते तदाज्ञां नानुसरन्ति स्म.

अन्ते तेषु मुख्यमपराधिनं कमपि दण्डयित्वा ते त्रासनीया इति निश्चयमुपाध्यायोऽकरोत्.

अपरेद्युः प्रातरागतेषु बालेषु निश्शब्दे पाठालये कश्चिदुच्चैः शीशब्दः श्रुतः. सद्योऽपराधिनमुपलब्धुमुपाध्यायः सचकितमवस्थितांस्तानभितो दृष्टिं प्रसारयामास; जग्राह च गोविन्दनामानं कञ्चिद् अयमपराधीति.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यद्यपि स बाल आत्मानमनपराधं समर्थयामास, तथाप्युपाध्यायस्तस्य वाचि न विश्वासं चकार. स हि बहुष्ववसरेष्वसत्यवादी प्रागुपाध्यायेन ज्ञात आसीत्.

वस्तुतस्तु नायमपराधी, किन्तु दामोदरो नाम बालकः. सोऽपराधिविचारणायां निर्णयमापतन्तं प्रतीक्षमाणः स्थितः.

---

## ३४. धैर्यम्. (ख)

अथ यावदुपाध्यायो गोविन्दं दण्डयितुं करेण लगुडमाददे, तावद् दामोदर आसनात् सहसोत्थायोपाध्यायं निवेदयामास—'मा तावद् भवान् गोविन्दं दण्डयतु. एषोऽस्मि कृतापराधः. अहं हि दुष्करां कामपि गणनां लेखनफलके चिरमवहितेन मनसा साधयन् स्थितः. तस्या लेखनावकाशलाभाय फलके गणनान्तरं लिखितपूर्वं मार्जन् गणनाया मुख्यांशमपि भ्रमादमार्जम्. तेन च कर्मणोपजनितया मनोव्यथयोपाध्यायसान्निध्यमपि विस्मृत्य रभसात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शूशब्दमकरवम्. सोऽयमपराधो न मया बुद्धिपूर्वं कृतः. यद्यार्य! भवानपराधिनि दण्डमवश्यं प्रयोक्तुमिच्छति, तर्हि मयि प्रयुङ्क्ताम्' इति.

उक्त्वा चैवं लगुडप्रहारं ग्रहीतुं वीरः स बालक उपाध्यायाभिमुखं करं प्रसारयामास.

उपाध्यायस्तु प्रीतस्तस्य करं गृह्णन्नुवाच—'साधु बालक! साधु समाचरितवानसि. प्रत्येमि ते सत्यवादिताम्, अबुद्धिपूर्वं चापराधम्. न चाहं त्वां दण्डयितुमुत्सहे; त्वं ह्यस्थाने दण्डप्रयोगमसहमानः स्वापराधं स्वयं कीर्त्तयन् दण्डं याचमानो धीरोदारचरितः प्रियोऽसि मे जातः.' इति.

विसृष्टश्चोपाध्यायेन स स्वमासनमभजत.

दशवर्षदेशीयोऽसौ बालोऽनेन सदाचारेण न केवलं स्वयं बहुमानमलभत, अपि त्वन्येषां बालानां सदाचारमार्गोपदेशी चाभवत्.

---

## ३५. दया. (क)

कापि हेमन्तसायाह्ने नारी नवतिहायना।
क्षामदुर्बलसर्वाङ्गी वीथ्यां प्रचलिता शनैः ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शीतेन वर्धमानेऽपि जरामूलेऽङ्गवेपथौ ।
यष्टिमालम्ब्य सा यत्नादग्रे द्वित्रपदान्यगात् ॥ २ ॥
अन्ते सा शीतवातेन बलादभिहता सती ।
प्रवेपमानावयवा कुब्जीभूय पथि स्थिता ॥ ३ ॥
अथ तेन पथा चेलुर्विसृष्टाः पाठमन्दिरात् ।
उच्चकोलाहला बाला गणशः स्फारकौतुकाः ॥ ४ ॥
ते क्रीडाकलितोत्साहात् त्वरमाणा गृहान् प्रति ।
दृष्ट्वापि दीनां तां वृद्धां तूष्णीमेवात्यलङ्घयन् ॥ ५ ॥
तस्याः कर्तुमशक्ताया एकमप्यग्रतः पदम् ।
न ते साहायकं चक्रुर्दीनायाः करदानतः ॥ ६ ॥
अन्ततस्तेषु सोत्साहः सौम्यः कश्चन बालकः ।
पार्श्वमागत्य वृद्धाया इत्थमुच्चैरभाषत ॥ ७ ॥

---

## ३६. दया. (ख)

'एहि मातः ! किमर्थं त्वं मार्गमध्ये विषीदसि ।
करोम्यहं ते साहाय्यं यदीतो गन्तुमिच्छसि' ॥ ८ ॥
स ततस्तदनुज्ञातः स्खलन्तीं तां पदेपदे ।
गृहं निनाय शनकैः करालम्बनदानतः ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अनेन कमर्णा तृप्तमानसोऽथ स बालकः ।
त्वं सङ्घं पुनरासाद्य बालानित्थमवोचत ॥ १० ॥
'अयि भो बालकाः! कस्याप्यसौ माता तपस्विनी ।
सर्वेषामविशेषेण दयनीयैव केवलम् ॥ ११ ॥
अस्याः साह्यं न चेत् कुर्युः कोऽपि दूरस्थिते सुते ।
अवश्यं केऽपि तत् कुर्युः स्वकरालम्बदायिनः' ॥ १२ ॥
आशिषायोजयद् बालं सा च शय्यां गता निशि ।
'ईशो दयावते तस्मै बालकाय प्रसीदतु' ॥ १३ ॥

---

## ३७. ऊर्णनाभो जालं च

कश्चिद् भूपतिरीश्वरसृष्टानां पदार्थानां प्रयोजनविज्ञानेऽतीव कौतुकवानवर्तत. स चिरं परीक्षमाणोऽपि कस्मै फलाय मक्षिका ऊर्णनाभाश्च सृष्टा इति ज्ञातुं न शशाक.

ततस्ते मानुषानुपयोगिन एवेति निश्चित्य स तेषां वधविनोदे रसिकोऽभवत.

अथैकदा महति युद्धे शत्रुभिः पराजितोऽसौ कान्दिशीकः क्वचिदरण्ये परिभ्रम्य श्रान्तः कस्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पि वृक्षस्य मूलच्छायायां सुप्तोऽभवत्. तमेनमुपलभ्य कोऽपि शत्रुभटः खड्गपाणिर्यावन्निभृतपदमुपससर्प, तावन्मक्षिकयौष्ठदंशिन्या राजा प्रबोधितो जातः. प्रबुद्धश्चात्याहितमुपस्थितं पश्यन् सहसा तन्निवारणेनात्मानं ररक्ष.

तां च निशां तत्रैव वने कस्याञ्चन गुहायां स राजा निलीय स्थितः. कश्चिदूर्णनाभस्तस्या गुहाया द्वारं तन्तुजालपरीतं तया निशया व्यातनोत्. अपरेद्युः प्रातर्गुहास्थो राजा गुहासमीपे चरतोर्द्वयोः स्वान्वेषिणोः शत्रुभटयोः सल्लापं शुश्राव. तयोरेकोऽवदत्—'असंशयमसावस्यां गुहायां निलीनस्तिष्ठति' इति. अन्योऽब्रवीत्—'नैतत् सम्भाव्यते, यत इदमूर्णनाभतन्तुजालं गुहाद्वारे निराकुलं दृश्यते. यद्यसौ गुहां प्रविष्टोऽभविष्यत्, तर्हि अवश्यमिदं लूतातन्तुजालं गुहाद्वारे त्रुटिताकुलमभविष्यद् इति.

अथ तां गुहां शून्यां निश्चित्य गतयोस्तयोः स राजा बद्धाञ्जलिरीश्वरं तुष्टाव—'भगवन्! भवता पूर्वेद्युरहं मक्षिकामुखेन रक्षितोऽस्मि; अद्य पुनरूर्ण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नाभमुखेन. विचित्रैः प्रकारैर्मानुषाणां महान्तमुपकारमुपनयन्ति ते सृष्टयः' इति.

---

## ३८. सूर्यवायू.

पुरा कदाचित् सूर्यवाय्वोर्विवादो बभूव— 'कतर आवयोर्बलीयान्' इति. अन्ते च 'यः पान्थहस्तगतमिदं घटिकायन्त्रं पान्थेन त्याजयति, स आवयोर्बलीयान्'इति निर्णयसंविदं तावकल्पयताम्.

ततो वायुरात्मनः सर्वां शक्तिमाश्रित्यातिजवनोऽतिशीतः प्रचण्डो भूत्वा वातुमारेभे. पान्थस्तथाभूतेन वायुनाभिहन्यमानोऽपि प्रावारावृतशरीर आत्मनो घटिकायन्त्रं दृढेन मुष्टिना गृह्णन् कथमपि जुगोप.

एवं विफलयत्ने वायौ सूर्यः प्रकाशितुमारेभे. प्रसृतमात्रैरेव तस्य किरणैर्वायवीये जलबाष्पे शीतिम्नि चापनीते पान्थस्तत्कालसह्येनोष्मणा क्षणमिव सुखमनुबभूव. अथाविच्छिन्नं कांश्चित क्षणान् दीप्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



माने सूर्ये असह्येनोष्मणाभिभूतः प्रक्षीणसत्त्वः पान्थो घटिकायन्त्रं दूरतः क्षिप्त्वा भूतले निषसाद.

अनेन प्रकारेण सूर्यो वायुं जिगाय. एतेन बलात्कारादनुनयः प्रशस्त इत्येष न्यायः स्पष्टो भवति.

---

## ३९. हिमालयः.

अस्ति भारतखण्डस्योत्तरस्यां सीमायां ७५० क्रोशानायतो हिमालयो नाम सर्वोन्नतो गिरिः. स हिमस्य स्थानभूततया हिमालय इत्युच्यते. स विस्तीर्णाया हिन्दुस्थानस्य समभूमेः प्रभृति बहुश्रेणीरूपमात्मानं कृत्वानुक्रमेणोन्नम्रो वर्तते. तस्याधस्सानौ अनूपप्रदेशाः सन्ति, यान् वेणुभिर्दीर्घैस्तृणविशेषैश्च निबिडसञ्छन्नानाश्रित्य वन्यमृगाः सुखं वसन्ति. तत्र ३००० पदोन्नताः प्रथमश्रेणीप्रदेशाः महार्घदारुदायिभिर्वनैर्व्याप्ता वर्तन्ते. ततः ७००० पदोत्सेधा भूमिरस्ति. तस्या बहुप्रस्रवणोपेताया बहवो भागा जनैरध्युषिता धान्यानि प्रसुवते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



महती मध्यमा श्रेणी तु १८०००पदान्युन्नतास्ति. तस्याःकटकेषु गभीरा नानारूपा गुहा विद्यन्ते. अपिच, अत्युच्चाः संख्यातीता भृगवो भीषणास्तत्रोपलभ्यन्ते. तानप्यतिलङ्घ्योर्ध्वं प्रसृतास्तुहिनावृता गिरिकूटाः स्वाग्रैर्निर्भिन्दन्त इवेन्द्रमणिमेचकमाकाशं लक्ष्यन्ते. तेषु च गिरिशृङ्गेषूदग्रतमं शृङ्गं आसमुद्रोपरितलात्२९०००पदोन्नतमिति निश्चितम्.

तस्या गिरिश्रेण्या दक्षिणे पार्श्वे १५०००पदोन्नता शाश्वती हिमराजिरस्ति. प्रदेशोच्चता तावदुष्णमात्रां न्यूनयति. अत उच्चतरेषु भागेष्वोषधयो जायमाना अल्पाकृतयो भवन्ति; परमोच्चेषु तु नैव जायन्ते. तत्र तिबेतदेशप्रापिका बह्व्यः पद्धतयः सन्ति. ताभिर्भाण्डानि मेषेष्वारोप्य पान्था नयन्ति. तत्र शुद्धवायुस्तथा स्वल्पः, यथा श्वसनमपि दुष्करम्.

अस्मिन् पर्वते लोकहितानि प्रशस्तानि वस्तूनि बहुलमुत्पद्यन्ते. अतोऽयं गुणत उन्नत्या च सर्वान् पर्वतानतिशेते. ततोऽस्य पर्वतराज इति प्रसिद्धिः.

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## ४०. उपदेशाः.

यदि जीविते नः पक्षपातोऽस्ति, तर्हि वृथा कालं नेतुं नार्हामः. जनो हि कालस्यापव्ययात् कुत्सितजीवितो भवति. रजतं सुवर्णं मौक्तिकं रत्नमित्येवञ्जातीयकं वस्तु नष्टमस्माभिर्भूयोऽर्जयितुं शक्यं; कालस्त्वतीतो नैव प्रत्यानेतुं शक्यः. अपिच, क्षणादिरूपाः सर्वे काला अस्माकं परमस्नेहास्पदस्यायुषोंऽशा भवन्ति. अत एव सकलान् पदार्थानपेक्ष्य कालो महार्घ इति पण्डिता वदन्ति.

किञ्च, कस्मैचित् कार्यया पर्याप्ततयास्माभिर्निर्णीतः कालः कार्यगौरवाद्विघ्नोपनिपाताद्वा प्रायेणापर्याप्त उपलभ्यते.

सोऽयमत्यन्तापेक्षितः सर्वोत्तमः कालाख्यः पदार्थो धनमिव प्रशस्तेषु कार्येष्वप्रमादेन विनियोक्तव्यः. यस्त्वेनमस्थाने द्यूतादौ विनियुङ्क्ते, स्थानेऽप्यतिमात्रं विनियुङ्क्ते, सोऽपव्ययकारी जनैर्निन्द्यते.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



असति विघ्ने कार्यं तदात्वे कुर्वीत, न तु श्वोर्थे विसृजेत्. प्रायशो हि कार्यकालं प्रोषितागतमिव प्रियं भ्रातरं विघ्नाः सम्परिष्वजन्ते.

शुभा मे काला उपतिष्ठन्तामिति प्रत्याशया यत्नमकुर्वाणस्य पुंसः कोऽर्थः सिद्धो भवति ? यदि तन्द्रीं विहाय सम्यगुद्यमं कुर्वीमहि, तर्हि, तानिमान् कालान् शुभानापादयितुं वयमसंशयं प्रभवेम.

अहापयन्तः कालं चेत् प्रवर्तेमहि कर्मसु ।
कल्याणानां समग्राणां संपद्येमहि भाजनम् ॥

सम्पूर्णेयं द्वितीया पाठावली.

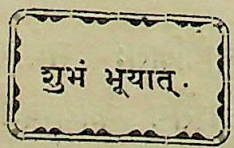


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# NOTES.

## Lesson 1. Mother and father.

तावत्–ind. at first (before doing anything else) मासान्—अत्यन्तसंयोगे (uninterrupted continuity) द्वितीया. कुक्षिः-womb.. क्लेशः— Pain. सहते--endures. पथ्यः—wholesome. गर्भः--fœtus. पुष्णाति–nourishes. पुष् 9. P. मृत्वा--having died. ind. P. P. अस्वादु--unpleasant to the taste. वत्सला--child-loving. चिन्त्यमानाः--past, pres. p. of चिन्त्. 10. U. to take care of. ऋणम्--debt. दैववत्--like God. ind.

## Lesson 2. Duty of men.

साहाय्यम्--help. सहायस्य भावः । प्रजा--subject, अस्तिमान्--अस्ति ind. (wealth) अस्यास्तीति तथा. पण्यम्--article for sale. विक्रीणीत--pot. of क्री 9. U. with वि. to sell. यौवनम्-youth. वार्धक्यम्--the course of worldly life.

## Lesson 3. Education.

क्षुत्--hunger. द्रुह्यन्ति–द्रुह् to hurt 4. P. आवश्यिका-necessary. दमयतुं-to control. वशयितुं--to fascinate.

## Lesson 4. Air.

परितः--around; this word always governs द्वितीयः व्यजनम्–fan. वीजनम्-- fanning. वाति-blows. उन्मूलयति-plucks up by the roots. संवृतं--closed. कालिघट्टः--Calcutta. वातायनम्--window. कारा-prison. पर्याप्तः-sufficient. मृतकल्पः--almost like dead. कालगर्तः--Black hole.

## Lesson 5. The cause of poverty.

धनिकः--wealthy. आयः--income. यादृच्छिकः--accidental, विवाहः—marriage. अधीनम्—dependent. तस्करः—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



thief. सैनिकः—soldier. व्याकुलभामासुः—agitated. विस्रब्धम्—confidently. adverb.

## Lesson 6. Chemist.

सुवर्णम्—gold. अभिनयन्—pretending. सम्भावयिष्यति—2. Fut. of सम्+भू+णिच् (causitive term.) to reward पेटिक—box. उदारम्—generous. द्रविणम्—wealth.

## Lesson 7. House.

समीचीनसन्निवेशानि—well-situated. समीचीनः सन्निवेशः येषां तानि। द्वित्रपदानि—two or three feet. संस्थानानि—structures. मध्याङ्गणानि—central yards. संकुचितवक्राः—narrow and crooked. कुतृण—rubbish. नानाविधानि—नाना विधाः येषां नानि अवरतः—atleast. सुधा—lime. महार्घः—valuable. मारीप्रसङ्गः—मार्याः (pestilence) प्रसङ्गः. अनुदिनम्—daily. वारः—week. सुखावहाः—pleasant. छायादानक्षमाः—छायायाः दाने क्षमा. गुल्मः—bush.

## Lesson 8. Selfishness.

श्वा—dog. मार्जारः—cat. महानसः—kitchen. सूद—cook. व्यकिरत्—scattered imperf. जन्त्वन्तरविलक्षणाः—अन्यो जन्तुः जन्त्वन्तरं तस्माद् विलक्षणा—(extraordinary) देयम्—दातुं योग्यम् विगायन्ति—वि+गै—to deride. कृती—blessed. दुःखैकरसः—दुःखमेव एको रसः यस्य सः. उभये—both.

## Lesson 9. Food.

औष्ण्यं—heat. प्रतिनियता—fixed. मात्रा—measure. निर्व्यापाराणि—inactive. ऊष्मा—heat. इन्धनम्—fuel. शीतिमा—coolness. परिणमति—becomes. मांसपरिणामी—fleshforming. सारः—substance. गोधूमः—wheat. मुद्गः—pulse. आढकः—doll. शाल्यन्नभोजिनः—those who live upon rice. स्निग्धकोमळम्—flaby and soft. पिष्टकः—cake. आमयः—disease.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## Lesson 10. Fate.

लिपिः—character. ईश्महे—ईश् 2 A. to be able. उद्यमः—effort. द्वारम्—way. मलप्रचुरः—dirty. मातापितरौ—माता च पिता च तौ. अप्रमाणम्—not regarded as an authority. पुरुषकारः—human effort.

## Lesson 11. Pearls.

शुक्तिविशेषः—oyster. पुटाः—shell परुषम् — rough. श्लक्ष्णः—smooth. कैवर्ताः — fishermen. तलस्थाः — those which lie in the bottom. धीवराः—fishermen. उपद्वासप्ततानि—द्व्यधिका सप्ततिः द्वासप्ततिः तस्या समीपे ये सन्ति तानि. नावारूढाः—नावं (boat) आरूढाः. रज्जुबद्धशिलान्यस्तपादः—रज्ज्वा (rope) बद्धा, सा चासौ शिला च रज्जुबद्धशिला, तस्यां न्यस्तौ पादौ यस्य सः. यावच्छक्ति—as for as possible. मञ्जूषा—box.

## Lesson 12. Quarrel.

कलहायसे—thou quarrelest. अरोचतः—imperf. of रुच्, I. A. to like. आह्वये—I challenge. विग्रहः—fight. क्रीडनम्—toy. तूष्णीम्—silently ind. स्वप्रतिभानुसारी—स्वस्य प्रतिभा. (audacity) स्वप्रतिभां अनुसरतीति तथा। अध्यवसायः—attempt. कुप्येयम्—pot. of कुप्, 4. P. to be angry with कार्षीः—aor. of कृ 7. U. to do. When preceded by the particle मा the augment अ of the aorist is dropped.

## Lesson 13. Who works for me.

स्वकुटीद्वारम्—स्वस्य कुटी स्वकुटी, तस्याः द्वारम्. ध्यायं ध्यायम्—often calling to mind, ind. अतथ्यग्राहिणी—one who takes a wrong view of things. केदारम्—field. उवाप—sowed perf. of वप् 1. P. लुलाव—reaped. perf. of लू 9. U. विदुषविशतं—विगतः तुषो (husk) यस्मात् तत्, वितुषं तच्च विक्षदं च विदुषविशतम्. असिः—knife. उलूखलम्—mortar. मुसलादिकम् —मुसलः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(pestle) आदिःयस्य तत्. निर्ममौ—perf. of मा 2. P. with निर्. निर् + मा to create. कार्पासतन्तुः—cottonthread. तत्तूलम् —तस्य तूलम्. (cotton) तत्तूलम्. निरस्थिकम्—निर्गतं अस्थि (kernal or stone) यस्मात् तत्, निरास्थिकम्. सूत्रणचणाः—those who are skilled in spinning. तन्तुवायाः—weavers. अवयन्—wove imperf. of वे 1. U. कुटीरम्—hut. असङ्ख्याः—न विद्यते सङ्ख्या येषां ते तथा.

## Lesson 14. Slaughter of the wolf.

उपत्यका—a land at the foot of mountain. भटवृत्तिः—भटस्य (sdldier) वृत्तिः mode of leading life) कनिष्ठे-youngest स्वसारौ—sisters. द्वादशम्—twelfth. भयाक्रन्दम्—भयेना आक्रन्दः (crying out). आभ्यन्तरम्—space between. कुठारः—axe. परशुः—axe. प्रान्स्राज्यचक्रवर्ती - प्रान्स् इति राज्यं तस्य चक्रवर्ती. कर्णाकर्णिकया—ear to ear. प्रवीणः=clever.

## Lesson 15. The cat and the Parrot.

पतेत्—will fall. नृत्येत्—will dance or (play) नृत् 4. P. वासगृहम्—inner apartment of a house. भित्तिः—wall. उद्विग्नम्—sorrowful. उड्डीय—having flown up. ind. p. p. डी of 4. A.

## Lesson 16. Echo.

आसन्नम्—near. साश्चर्यकातरः—surprised. (one feeling astonishment and fear) तारम्—loudly. जुवोष—घुष् to cry. con. perf. of घुष् 4 P. to cry. अधिक्षेपवचनानि—vile words. गर्हिता—vile. प्रायोक्ष्यथाः—cond. of युज् 7. U. with प्र. प्र+युज् to use. श्रु-to hear. 1. 7. अश्रोष्यः—cond. of श्रु to hear 5. P.

## Lesson 17. Camel.

मरवः—deserts. यावद्दृष्टिपातम्—as far as the eys can reach. सिकताः—sand. शर्कराः—gravel. प्रान्तरम्—long lone-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



some path. पाथेयजातम्—पथे हितानि पाथेयानि तेषां जातम्. सागरपान्थाः—sea-travellers. मरुमहानौः—ship of the desert. निविशमानः—pres. act p. of विश् (6. P.) with नि. नि+विश्, A. to sit. प्रह्वः—kneeling. आरबीयाः—Arabians. ऊर्णा—wool.

## Lesson 18. Idleness.

आशंसा—desire. दोलान्दोलनम्—दोलायां (swing) आन्दोलनं (swinging). नवनवग्रन्थपरिशीलनं—नवनवानां ग्रन्थानां परिशीलनम्.

## Lesson 19. (contd.)

मौढ्यम्—foolishness. अद्वेषम्—imperf. of द्विष्, 2. P. to dislike. अनुशास्ति अनु+शास् to instruct. दूरम्—highly. अनुशास्ति—pres. शास्, P. to instruct with अनु. आत्मव्यतिक्रमः—आत्मनो व्यतिक्रमः (transgressing) ग्रासार्जनाय—ग्रासस्य (food) अर्जनाय.

## Lesson 20. Usefulness of life.

मित्राणि — friends. सत्ता — virtuous. यशः—glory. कीर्तिः—renown. वित्तम् — wealth. चलाचलम्—unsteady. वर्षाः — rainy season. always fem, and in the plural. प्रेत्य—having died. ind p. p. of ई (2. P. with प्र.)

## Lesson 21. Horse.

उदात्तप्रकृतिः—of a noble nature. पलालानि—straw कुलीनः—of good breed. अश्वारोहः—mounted soldier. अभिजातः—of good breed. ओजस्वी—energetic. सादी — horseman. तावच्चिरम्— for so long a time. गृध्रवायसादयः—गृध्र-(eagle). वायसश्चादिः येषां ते.

## Lesson 22. The man and the lion.

गोचरः—grasp. अशकत्—aor. of शक् (to be able 5. P). उल्लिलेख—perf. of लिख् 6. P. with उत् to determine. प्रपातः—cliff. कञ्चुकः—dress. उष्णीषम्—head-dress.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## Lesson 23. Whale.

तरति—तॄ, 1. P. to traverse. आस्यकोटरम्—आस्यं कोटः रमिव आस्यकोटरम्. तनुकायानि—तनुः (then) कायः येषां तानि. यादांसि—aquatic animal; सङ्घशः—in heaps ind. महानौः—ship. परिच्छेत्तुम्—inf. of छिद् (7. P). with परि. to set limits to. तिमिवेधनीनामा—तिमिवेधनी (harpoon) इति नाम यस्य सः मेदांसि—fat. तिमिविशेषः—sperm whale. दीपवर्तिनिर्माणम्—दीपस्य वर्तिः दीवर्तिः (candle) तस्याः निर्माणम्.

## Lesson 24. (contd.)

स्वेलति—sports. वालावीजनकेलिः — वालस्य वीजनं (blowing) वालवीजनम्. तदेव केलिः (sport). वीथिः—way पारावारः—sea: तस्य वालः तद्वालः एकः प्रहारः एकप्रहारः तद्वालस्य एकप्रहारः तद्वालैकप्रहारः तेन अस्ता (tossed) मग्ना च नौः यस्य सः, तद्वालैकप्रहारास्तमग्ननौकः व्यादाय—having opened ind. p. p. शिरोरन्ध्रद्वारम्—शिरसि रन्ध्रम्. (hole) शिरोरन्ध्रं तस्य द्वारं (way) गिरन्—pres. act. p. of गॄ 6. P. to swallow. कण्ठीरवः—lion. साम्राज्यसुखम्—pleasure derived from being an Emperor. निर्विशति—feels. अकुतोभयम्—नास्ति कुतोऽपि भय यस्य तत् not threatened from any quarter.

## Lesson 25. fox.

मृगवागुरा—मृगाणां वागुरा (net) मृगवागुरा संलग्नपादः—संलग्नाः पादाः यस्य सः. जालम्—net. वहनीयम्—वोढुं (to bear) योग्यम्. त्वदर्थे-तव अर्थे (ind). त्वदर्थे. धूर्तः-crafty. पश्यतस्तस्य gen. case. showing disregard. (पश्यन्तं ते अनादृत्य)

## Lesson 26. Catechism.

कतमः-which of many. गृहमूलम्-foundation of a house. क्लेदः-damp भित्त्यधोभागे-भित्तेः (wall) अधोभागः. घनेष्टका-घना इष्टका brick. चूर्णलेप.-mortar तदाकरः तासां-आकारः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



quarry. इष्टकायन्त्रपरिच्छिन्ना – इष्टकायाः यन्त्रं (instrument) यन्त्रं तेन परिच्छिन्ना. अश्मतक्षा – stone-cutter. टङ्कः – chisel. तष्ट्वा – having cut off. इष्टकाचेता – इष्टकाभिः चेता–building a brick land. वालुका – sand. पाकपुटी – kiln. शुक्तिः – oyster. चतुरश्रम् – चतस्रः अश्रयः (angles) यस्य तत्. कवाटम् – door. वातायनम् – window. प्रकृतिः – material cause. विश्लिष्टम् – disjoined. घटयति – closes. विघटयति – opens. द्वारग्रन्थयः – hinges. नियन्त्र्यते – pass. of यन्त्र्. (1 & 10 U.) fasten. अर्गलम् – latch तालकम् lock.

## Lesson. 27. (contd.)

दर्पणानुषक्ताः – glazed. किंनिमित्तम् – for what reason. (words denoting cause, &c. are used in all cases). आलोकः – luminosity. लवणविशेषमिश्रा – लवणविशेषेण (soda) मिश्रा. आग्नेयशिला – flint. द्रवीकृता – melted. आच्छाद्यते – Pass. of छद्, 10. U. to cover. पटलम् – roof. कृशेष्टका – tile. कोष्ठः – room. कक्ष्या – inner apartment. उपरिभूमिका – upstair. विश्रम्यते – impersonal of श्रम्. 4. P. with वि to rest. पिधानम् – hiding.

## Lesson 28. Backbitng.

कैङ्कर्यम् – servileness उपासाञ्चक्रिरे – perf. of आस् (2 A). with उप to wait upon. जिज्ञासमानः – ज्ञातुं इच्छन् desiring to know, वनगर्दभः – zebra. अवजानाति – disregards. अज्ञासिषम् – aor. of ज्ञा. अन्विष्यन् – searching. कोष्णम् – lukewarm. श्रुतमात्रम् – श्रुतमेव. अभिहुत्य – ind. p. p. of हु 1. P. with अभि to bound.

## Lesson 29. The king and the prisoners.

महाकारागृहम् – chief prison. प्राड्विवाकः – judge. अन्यथा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ग्रहः – mistake. ययाचिरे perf. of याच् 1. A. to beg. हन्त – alas ! धनपेशिका – धनस्य पेशिका (purse). चोरितवान् – one who stole. वस्तुम् – ind. inf. of वस् to dwell विसर्जय – release. छिन्नशृङ्खलः – छिन्ना शृङ्खला (chains) यस्य सः.

## Lesson 30. Agreeable verses.

निर्वृतिः–satisfaction- खलः–tale-bearer. गुह्यम् – secret. विरक्तः–free from passion. प्रवासः–going abroad कोकिलाः–cuckoos. क्षमा—forgiveness.

## Lesson 31. Thoughtlessness.

दम्पती–जाया च पतिश्च. नकुलः–mungoose. विस्रब्धः–faithful. उत्सङ्गः—lap. उपलालयन्तौ –pres. p. of लल् (10. U.) with उप – to caress. पुमपत्यम् – पुमांश्च तत् अपत्यं (progeny) च. रेमे–perf. of रम् 1. A. to sport. कार्यान्तरव्यापृतौ—अन्यत् कार्यं कार्यान्तरं, तस्मिन् व्यापृतौ. अन्वासाञ्चक्रे–perf. of आस् with अनु–(sat with) प्रतिपत्तिः–affectionate behaviour. कृषिः–husbanding. मञ्चप्रसुतः मञ्चे (cradle) प्रसुतः. वापी—tank. मुहूर्तः–period. द्वारोपान्तः–द्वारस्य उपान्तः side. रक्तप्रवाहोपलिप्तः—रक्तस्य प्रवाहेण उपलिप्तः (besmeared) निर्वर्णयामास–marked attentively. दुर्दैववशात्–unfortunately. विदारितवान्—one who tore. क्रोधान्धहृदया—क्रोधेन अन्धं (unable to see anything) हृदयं यस्याः सा. चिक्षेप perf. of क्षिप् 6. U. to throw. स्नेहौदार्यमधुरः—स्नेहेन औदार्येण च मधुरः (charming) निष्प्रतीकारः–निर्गतः प्रतीकारो (remedy) यस्मात् सः. अनुतापः—subsequent regret or sorrow. पुत्रकल्पः — ईषद् असमाप्तः पुत्रः almost equal to a son. असमीक्ष्यकारिणी—acting inconsiderately. निनिन्दुः —perf. of निन्द् 1. P. to reproach.

## Lesson 32. Metal.

व्यामिश्राः=compounded. क्षालनम्— washing. क्षोदनम्—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



crushing. भास्वरगौरम्—bright and yellow. मृदु—soft. पात्राणि—beds of rivers. सिकतासङ्कीर्णम्—mixed with sand. नाणकानि–coins. दीप्रशुक्लवर्णम् - white and shining. उपलब्धिः —finding. अवरः—inferior. आनीलधूसरम् —bluish-grey. जलप्रणाल्यः –water pipes.

## Lesson 33. Courage.

निभृतं –ind. unperceived. अबाधन्त –imperf. of बाध् 1. A. to bother. त्रासनीयाः – त्रासयितुं (to terrify) योग्याः. अपरेद्युः—another day. सचकितम्—afraid. जग्राह—perf. of ग्रह् 9. U. to hold. समर्थयामास –firmly declared. अपराधिविचारणा - अपराधिनः विचारणा (investigation.) प्रतीक्षमाणः - expecting.

## Lesson 34. (contd.)

लगुडः—cudjel. दुष्करा—dificult. मणना—problem. लेखनफलकम्—slate. मार्जन् – pres. part. of मृज् 2. p. to rub. प्रयोक्तुम्– to bestow. प्रयुङ्क्ताम् – imp. of युज् 7. A. with प्र. धीरोदारचरितः- धीरं उदारं च चरितं यस्य सः । दशवर्षदेशीयः– nearly ten years old.

## Lesson 35. Mercy.

वेपथुः– shiver. द्वित्रपदानि— द्वे त्रीणि वा द्वित्राणि, द्वित्राणि च तानि पदानि च. कुब्जीभूय ind. p. p. of कुब्जीभू (to become crooked.) स्फारकौतुकाः– स्फारं (extreme) कौतुकं (curiosity) येषां ते. विषीदसि – सद् 1. P, with वि to regret.

## Lesson 36. (contd.)

स्खलन्ति–pres. part of स्खल् 1. P. to stumble. तपस्विनी–helpless.

पं० आचार्य प्रियव्रत विद्या वाचस्पति प्रदत्त संग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## Lesson 37. The spider and its web.

वधविनोदः – वध(killing) एव विनोदः (sport) कान्दिशीकः– running away terrified. खड्गपाणिः – खड्गः पाणौ यस्य सः. निभृतपदम् – निभृतं(noiseless) पदं यस्मिन् कर्मणि तत्. ओष्ठदंशिनी -one who bites the lips. अत्याहितं –great calamity निराकुलम्–unspoiled. त्रुटिताकुलम्– त्रुटितं (torn) च आकुलं च.

## Lesson 38. Sun and wind.

घटिकायन्त्रं–time piece. त्याजयति – causes to throw off. निर्णयसंवित् –निर्णयस्य संवित् (agreement) प्रावारावृतशरीरः प्रावारेण आवृतं शरीरं यस्य सः. मुष्टिः–clenched hand. जुगोप - perf. of गुप् 1. P. to protect. वायवीयः - वायोरयं वायवीयः. जलबाष्पः - aqueous vapour. ऊष्मा - heat. अनुनयः - conciliation.

## Lesson 39. The Himalayas.

क्रोशः - a distance of 2 miles. बहुश्रेणीरूपः - बह्वयः श्रेण्यः (range) रूपं यस्य सः. अनूपप्रदेशाः - अनूपाः (aqueous) च ते प्रदेशाश्च. बहुप्रश्रवणोपेता. बहुभिः प्रश्रवणैः (springs) उपेता. भृगवः - cliff. अतिशेते - excels.

## Lesson 40. Advice

अपव्ययः - waste. परमस्नेहास्पदम् - परमस्य स्नेहस्यास्पदं (object.) आयुः - duration of life. तदात्वम् - current moment. प्रोषितागतः - one who has returned from foreign travel. सम्परिष्वजन्तु - [illegible] to embrace with सं and परि. [illegible] - laziness. कल्याणम् - happiness.

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

Sig. Date

Accs on

Class on

Cat on

Tag

Filing

E A R.

Any other

Checked

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# क्रय्याणि पुस्तकानि.

| | Rs | as | p |
|---|---|---|---|
| अक्षरमाला. ... ... ... | ० | ० | ६ |
| श्यामलादण्डकम्. ... ... ... | ० | ० | ६ |
| संक्षेपरामायणम्. ... ... ... | ० | १ | ० |
| व्याघ्रालयशतकम्. ... ... | ० | १ | ० |
| सुभगोदयः. (श्रीगौडपादाचार्यकृता देवीस्तुतिः) | ० | १ | ३ |
| मूषिकवाहनस्तोत्रं, सरस्वतीस्तोत्रं, अदित्यहृदयं, राघवाष्टकं, चन्द्रशेखराष्टकं, मृत्युञ्जयस्तोत्रं च. | ० | १ | ० |
| विष्णुसहस्रनामस्तोत्रं, शिवकवचस्तोत्रं, इन्द्रीक्षास्तोत्रं च. ... ... | ० | २ | ६ |
| चाणाक्यनीतिसूत्रम्. ... ... | ० | २ | ० |
| प्रथमापाठावली. ... ... ... | ० | ५ | ० |
| द्वितीयापाठावली. ... ... ... | ० | ६ | ० |
| तृतीया पाठावली. ... ... ... | ० | ७ | ० |
| Raghuvamsa (Cantos I—V) | 0 | 3 | 0 |
| Do. Translation. ... | 0 | 7 | 0 |
| Do. Notes. ... ... | 0 | 7 | 0 |
| Paraphrase on Meghaduta & Nitisataka | 0 | 4 | 0 |
| Key to the First Book of Sanskrit (new edition) | 0 | 6 | 0 |
| Key to the Second Book of Sanskrit (Revised Edition) | 0 | 8 | 0 |

Apply to

**K. Narayana Iyengar,**
Central Book Depot
TRIVANDRUM.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar